CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2015 with Solution PDF-Set 2/1/3

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 103**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 4, 6, 7, 8, 9, 11 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. पैदा करती कलम विचारों के जलते अंगारे,
और प्रज्वलित प्राण देश क्या कभी मरेगा मारे ?
लहू गर्म करने को रक्खो मन में ज्वलित विचार,
हिंस्र जीव से बचने को चाहिए किन्तु तलवार ।
एक भेद है और जहाँ निर्भय होते नर-नारी
कलम उगलती आग, जहाँ अक्षर बनते चिंगारी
जहाँ मनुष्यों के भीतर हरदम जलते हैं शोले,
बातों में बिजली होती, होते दिमाग में गोले ।
जहाँ लोग पालते लहू में हालाहल की धार
क्या चिंता यदि वहाँ हाथ में हुई नहीं तलवार ? [5 अंक]

1(क). कलम किस बात की प्रतीक है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए पाठ का संदर्भ और उसके शब्दों का सटीक अर्थ है।
- मुख्य विचार पहचानकर प्रश्न के अनुरूप संक्षिप्त तथा स्पष्ट उत्तर देना चाहिए।

चरण 1: पाठ में संकेत पहचानना कवि कहता है कि कलम विचारों के जलते अंगारे पैदा करती है। इससे स्पष्ट होता है कि यहाँ कलम का अर्थ केवल लिखने का उपकरण नहीं है। वह प्रभावशाली विचारों को जन्म देने वाली लेखनी है।

चरण 2: प्रतीक का अर्थ समझना ये विचार मनुष्य के भीतर उत्साह, साहस और देशप्रेम जगाते हैं। इसलिए कलम बौद्धिक शक्ति, चेतना और ओजपूर्ण विचारों की अभिव्यक्ति का प्रतीक है।

चरण 3: निष्कर्ष कलम विचार, ज्ञान और जागरण की शक्ति का प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: प्रतीक का अर्थ बताते समय उससे जुड़ी क्रिया देखें; यहाँ कलम विचारों के अंगारे पैदा करती है।

1(ख). तलवार की आवश्यकता कहाँ पड़ती है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए पाठ का संदर्भ और उसके शब्दों का सटीक अर्थ है।
- मुख्य विचार पहचानकर प्रश्न के अनुरूप संक्षिप्त तथा स्पष्ट उत्तर देना चाहिए।

चरण 1: संबंधित पंक्ति चुनना कवि ने सीधे कहा है कि हिंस्र जीव से बचने के लिए तलवार चाहिए। इस पंक्ति में तलवार का संबंध बाहरी संकट से बचाव और आत्मरक्षा से है।

चरण 2: प्रयोजन स्पष्ट करना जब आक्रमणकारी जीवन या सुरक्षा को संकट में डालता है, तब उसका प्रतिरोध करने के लिए शस्त्र की जरूरत होती है। यहाँ तलवार आक्रमण के शौक का नहीं, रक्षा की शक्ति का संकेत है।

चरण 3: निष्कर्ष हिंस्र जीव अथवा आक्रमणकारी से अपनी रक्षा करने के लिए तलवार की आवश्यकता पड़ती है।

त्वरित सुझाव: कहाँ के उत्तर में स्थान खोजने के बजाय पंक्ति में दी गई परिस्थिति और रक्षा का उद्देश्य लिखें।

1(ग). लहू को गर्म करने से कवि का क्या आशय है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए पाठ का संदर्भ और उसके शब्दों का सटीक अर्थ है।
- मुख्य विचार पहचानकर प्रश्न के अनुरूप संक्षिप्त तथा स्पष्ट उत्तर देना चाहिए।

चरण 1: शाब्दिक अर्थ से आगे बढ़ना कवि मन में ज्वलित विचार रखने को कहता है। अतः लहू गर्म करने का अर्थ शरीर के रक्त का ताप बढ़ाना नहीं, बल्कि मनुष्य की निष्क्रियता दूर करना है।

चरण 2: भाव का विस्तार करना तेजस्वी विचार मनुष्य में निर्भयता और कर्म करने की शक्ति पैदा करते हैं। वह अन्याय या संकट के सामने हिम्मत नहीं हारता और देश के लिए सक्रिय होने को तैयार रहता है। यही इस अभिव्यक्ति का भाव है।

चरण 3: निष्कर्ष लहू को गर्म करने का आशय मन में उत्साह, साहस, देशप्रेम और संघर्ष की प्रेरणा जगाना है।

त्वरित सुझाव: लाक्षणिक प्रयोग का अर्थ उसके साथ आए शब्दों से तय करें; ज्वलित विचार यहाँ उत्साह का संकेत हैं।

1(घ). कैसे व्यक्ति को तलवार की आवश्यकता नहीं होती ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए पाठ का संदर्भ और उसके शब्दों का सटीक अर्थ है।
- मुख्य विचार पहचानकर प्रश्न के अनुरूप संक्षिप्त तथा स्पष्ट उत्तर देना चाहिए।

चरण 1: व्यक्ति के गुण पहचानना कवि ऐसे नर-नारियों का वर्णन करता है जो निर्भय हैं, जिनके अक्षर चिंगारी बनते हैं और जिनके भीतर शोले जलते हैं। ये बिंब उनके दृढ़ मनोबल और ओजस्वी चेतना को व्यक्त करते हैं।

चरण 2: आत्मबल और शस्त्र का संबंध जिस व्यक्ति की वाणी में प्रभाव, विचारों में तेज और मन में प्रतिरोध का साहस है, उसकी शक्ति केवल हाथ में पकड़े शस्त्र पर निर्भर नहीं रहती। इसीलिए कवि ऐसे व्यक्ति के लिए तलवार के अभाव की चिंता नहीं करता।

चरण 3: निष्कर्ष निर्भय, तेजस्वी विचारों से संपन्न और भीतर साहस तथा संघर्ष की ज्वाला रखने वाले व्यक्ति को तलवार की आवश्यकता नहीं होती।

त्वरित सुझाव: इस उत्तर में निर्भयता के साथ विचारों का तेज और आंतरिक साहस भी लिखें; केवल बलवान कहना अधूरा होगा।

1(ङ). तलवार कब अपरिहार्य हो जाती है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए पाठ का संदर्भ और उसके शब्दों का सटीक अर्थ है।
- मुख्य विचार पहचानकर प्रश्न के अनुरूप संक्षिप्त तथा स्पष्ट उत्तर देना चाहिए।

चरण 1: निर्णायक पंक्ति का आधार काव्यांश में हिंस्र जीव से बचने के लिए तलवार की जरूरत स्पष्ट की गई है। यह वह स्थिति है जिसमें बाहरी हिंसा से बचाव के लिए रक्षा का साधन आवश्यक हो जाता है।

चरण 2: अपरिहार्यता स्पष्ट करना विचार मनुष्य को उत्साह और साहस देते हैं, पर हिंसक आक्रमण के सामने अपनी सुरक्षा के लिए प्रत्यक्ष प्रतिरोध भी करना पड़ सकता है। ऐसी रक्षा की परिस्थिति में तलवार का प्रयोग टाला नहीं जा सकता।

चरण 3: निष्कर्ष जब हिंस्र जीव या आक्रमणकारी से प्राणों की रक्षा के लिए प्रत्यक्ष प्रतिरोध करना पड़े, तब तलवार अपरिहार्य हो जाती है।

त्वरित सुझाव: कब का उत्तर परिस्थिति के रूप में दें और उसे काव्यांश की हिंस्र जीव से रक्षा वाली पंक्ति से जोड़ें।

---

2. राष्ट्र केवल ज़मीन का टुकड़ा ही नहीं बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत होती है जो हमें अपने पूर्वजों से परम्परा के रूप में प्राप्त होती है । जिसमें हम बड़े होते हैं, शिक्षा पाते हैं और साँस लेते हैं – हमारा अपना राष्ट्र कहलाता है और उसकी पराधीनता व्यक्ति की परतंत्रता की पहली सीढ़ी होती है । ऐसे ही स्वतंत्र राष्ट्र की सीमाओं में जन्म लेने वाले व्यक्ति का धर्म, जाति, भाषा या सम्प्रदाय कुछ भी हो, आपस में स्नेह होना स्वाभाविक है । राष्ट्र के लिए जीना और काम करना, उसकी स्वतंत्रता तथा विकास के लिए काम करने की भावना राष्ट्रीयता कहलाती है ।

जब व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से धर्म, जाति, कुल आदि के आधार पर व्यवहार करता है तो उसकी दृष्टि संकुचित हो जाती है । राष्ट्रीयता की अनिवार्य शर्त है – देश को प्राथमिकता, भले ही हमें 'स्व' को मिटाना पड़े । महात्मा गांधी, तिलक, सुभाषचन्द्र बोस आदि के कार्यों से पता चलता है कि राष्ट्रीयता की भावना के कारण उन्हें अनगिनत कष्ट उठाने पड़े किंतु वे अपने निश्चय में अटल रहे । व्यक्ति को निजी अस्तित्व कायम रखने के लिए पारस्परिक सभी सीमाओं की बाधाओं को भुलाकर कार्य करना चाहिए तभी उसकी नीतियाँ-रीतियाँ राष्ट्रीय कही जा सकती हैं ।

जब-जब भारत में फूट पड़ी, तब-तब विदेशियों ने शासन किया । चाहे जातिगत भेदभाव हो या भाषागत – तीसरा व्यक्ति उससे लाभ उठाने का अवश्य यत्न करेगा । आज देश में अनेक प्रकार के आन्दोलन चल रहे हैं । कहीं भाषा को लेकर संघर्ष हो रहा है तो कहीं धर्म या क्षेत्र के नाम पर लोगों को निकाला जा रहा है जिसका परिणाम हमारे सामने है । आदमी अपने अहं में सिमटता जा रहा है । फलस्वरूप राष्ट्रीय बोध का अभाव परिलक्षित हो रहा है । [15 अंक]

2(क). गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए पाठ का संदर्भ और उसके शब्दों का सटीक अर्थ है।
- मुख्य विचार पहचानकर प्रश्न के अनुरूप संक्षिप्त तथा स्पष्ट उत्तर देना चाहिए।

चरण 1: केंद्रीय विषय पहचानना गद्यांश राष्ट्र को सांस्कृतिक विरासत बताकर राष्ट्रीयता का अर्थ स्पष्ट करता है। वह देश की स्वतंत्रता और विकास के लिए काम करने तथा देश को अपने स्वार्थ से ऊपर रखने पर बल देता है।

चरण 2: पूरे गद्यांश से शीर्षक मिलाना आगे धर्म, जाति, भाषा और क्षेत्र के भेद से उत्पन्न फूट की चर्चा है। इसलिए राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय एकता ऐसा संक्षिप्त शीर्षक है जो गद्यांश के सकारात्मक संदेश तथा विभाजन की चिंता, दोनों को समेटता है।

चरण 3: निष्कर्ष गद्यांश का उचित शीर्षक है—राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय एकता।

त्वरित सुझाव: शीर्षक पूरे गद्यांश की केंद्रीय बात बताए; केवल अंतिम अनुच्छेद के आंदोलनों तक उसे सीमित न करें।

2(ख). अस्तित्व एवं अनिवार्य से प्रत्यय और उपसर्ग छाँटकर लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए पाठ का संदर्भ और उसके शब्दों का सटीक अर्थ है।
- मुख्य विचार पहचानकर प्रश्न के अनुरूप संक्षिप्त तथा स्पष्ट उत्तर देना चाहिए।

चरण 1: प्रत्यय अलग करना अस्तित्व शब्द में अस्ति के अंत में त्व जुड़ा है। यह भाव या अवस्था बताने वाला प्रत्यय है। अतः शब्द का

विभाजन अस्ति + त्व होगा और पूछा गया प्रत्यय त्व है।

चरण 2: उपसर्ग अलग करना अनिवार्य शब्द में निवार्य से पहले निषेधसूचक अन् जुड़ा है। इसका विभाजन अन् + निवार्य है। अर्थ है जिसे टाला न जा सके। इसलिए यहाँ उपसर्ग अन् लिखना चाहिए, पूरे अनिवार्य शब्द को उपसर्ग नहीं कहना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष अस्तित्व में प्रत्यय त्व है; अनिवार्य में उपसर्ग अन् है।

त्वरित सुझाव: प्रत्यय शब्द के अंत में और उपसर्ग आरंभ में खोजें; अस्ति + त्व तथा अन् + निवार्य लिखकर जाँच लें।

2(ग). "जब व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से धर्म, जाति, कुल आदि के आधार पर व्यवहार करता है तो उसकी दृष्टि संकुचित हो जाती है।" रचना के आधार पर वाक्य का प्रकार लिखिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए पाठ का संदर्भ और उसके शब्दों का सटीक अर्थ है।
- मुख्य विचार पहचानकर प्रश्न के अनुरूप संक्षिप्त तथा स्पष्ट उत्तर देना चाहिए।

चरण 1: आश्रित उपवाक्य पहचानना जब व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से धर्म, जाति, कुल आदि के आधार पर व्यवहार करता है—यह अंश जब से आरंभ होता है। यह अपने अर्थ की पूर्णता के लिए आगे के कथन पर निर्भर है।

चरण 2: प्रधान उपवाक्य और संबंध तो उसकी दृष्टि संकुचित हो जाती है—यह प्रधान उपवाक्य है। जब और तो दोनों उपवाक्यों को आश्रय-आश्रित संबंध में जोड़ते हैं। एक प्रधान और एक आश्रित उपवाक्य होने के कारण यह मिश्र वाक्य है, संयुक्त वाक्य नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष यह रचना के आधार पर मिश्र वाक्य है।

त्वरित सुझाव: केवल दो क्रियाएँ देखकर संयुक्त वाक्य न लिखें; जब से शुरू होने वाले आश्रित अंश का प्रधान अंश से संबंध देखें।

2(घ). 'स्व' से क्या तात्पर्य है, उसे मिटाना क्यों आवश्यक है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए पाठ का संदर्भ और उसके शब्दों का सटीक अर्थ है।
- मुख्य विचार पहचानकर प्रश्न के अनुरूप संक्षिप्त तथा स्पष्ट उत्तर देना चाहिए।

चरण 1: स्व का संदर्भगत अर्थ गद्यांश देश को प्राथमिकता देने के साथ स्व को मिटाने की बात कहता है। अंतिम अनुच्छेद में मनुष्य के अपने अहं में सिमटने को राष्ट्रीय बोध के अभाव से जोड़ा गया है। अतः यहाँ स्व किसी व्यक्ति के जीवन या उसकी गरिमा को नष्ट करने का निर्देश नहीं है। इसका आशय उस संकीर्ण निजी आग्रह से है जो सामूहिक हित को पीछे कर देता है।

चरण 2: त्याग की आवश्यकता समझना निजी स्वार्थ और अहं के कारण व्यक्ति धर्म, जाति, भाषा या क्षेत्र के आधार पर भेद करने लगता है। इससे पारस्परिक स्नेह और राष्ट्रीय एकता कमजोर होते हैं तथा बाहरी शक्तियाँ फूट का लाभ उठा सकती हैं। इन बाधाओं को छोड़कर देश की स्वतंत्रता, विकास और एकता के लिए काम करना ही राष्ट्रीयता है। इसलिए राष्ट्रहित के सामने स्वार्थ का त्याग आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष यहाँ स्व का तात्पर्य निजी अहं, संकीर्ण स्वार्थ और केवल अपने हित को प्रधान मानने की भावना से है। राष्ट्रीय हित को सर्वोपरि रखने के लिए इसका त्याग आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: स्व का अर्थ प्रसंग से लें और उसके त्याग को देश की प्राथमिकता, एकता तथा विकास से जोड़कर समझाएँ।

2(ङ). आशय स्पष्ट कीजिए – "राष्ट्र केवल ज़मीन का टुकड़ा ही नहीं बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत भी है ।" [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए पाठ का संदर्भ और उसके शब्दों का सटीक अर्थ है।
- मुख्य विचार पहचानकर प्रश्न के अनुरूप संक्षिप्त तथा स्पष्ट उत्तर देना चाहिए।

चरण 1: भूभाग से आगे का अर्थ गद्यांश के अनुसार हम राष्ट्र में बड़े होते हैं, शिक्षा पाते हैं और जीवन बिताते हैं। हमारा संबंध उसकी भूमि से ही नहीं, उस सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण से भी बनता है जिसमें हमारा व्यक्तित्व विकसित होता है। इसी कारण राष्ट्र को केवल जमीन का एक टुकड़ा मानना उसके व्यापक अर्थ को सीमित कर देना होगा।

चरण 2: सांस्कृतिक विरासत का महत्त्व पूर्वजों से प्राप्त परंपराएँ, संस्कार और साझा जीवन-अनुभव हमारी पहचान का आधार बनते हैं। धर्म, जाति, भाषा और संप्रदाय की भिन्नता के बावजूद देशवासियों में स्नेह और अपनापन होना इसी व्यापक राष्ट्रीय भावना का अंग है। इस विरासत की रक्षा तथा राष्ट्र की स्वतंत्रता और विकास के लिए काम करना भूमि और संस्कृति, दोनों के प्रति उत्तरदायित्व निभाना है।

चरण 3: निष्कर्ष राष्ट्र का अर्थ केवल निश्चित सीमाओं वाला भूभाग नहीं है। उसमें पूर्वजों से मिली परंपराएँ, जीवन-मूल्य और साझा सांस्कृतिक विरासत भी सम्मिलित हैं, जो लोगों को आत्मीयता से जोड़ती हैं।

त्वरित सुझाव: आशय में भूमि के साथ परंपरा, सांस्कृतिक पहचान और परस्पर अपनापन जोड़ें; केवल भौगोलिक परिभाषा न दें।

2(च). राष्ट्रीयता से लेखक का क्या आशय है ? गद्यांश में चर्चित दो राष्ट्रभक्तों के नाम लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- राष्ट्रीयता का अर्थ गद्यांश में दी गई परिभाषा से ग्रहण करना है।
- राष्ट्रभक्तों के नाम केवल गद्यांश में उल्लिखित व्यक्तियों में से चुनने हैं।

चरण 1: राष्ट्रीयता का आशय समझना लेखक के अनुसार राष्ट्रीयता राष्ट्र के लिए जीने और काम करने की भावना है। इसका उद्देश्य देश की स्वतंत्रता की रक्षा तथा उसके विकास के लिए कार्य करना है। इसमें धर्म, जाति, भाषा और संप्रदाय की सीमाओं से ऊपर उठकर देश को प्राथमिकता दी जाती है। इसलिए केवल देश में जन्म लेना पर्याप्त नहीं; उसके प्रति समर्पण और कर्तव्य निभाना भी आवश्यक है।

चरण 2: गद्यांश से दो राष्ट्रभक्त चुनना गद्यांश में महात्मा गांधी, तिलक और सुभाषचन्द्र बोस का उल्लेख है। इनमें से दो नाम महात्मा गांधी और सुभाषचन्द्र बोस हैं। लेखक बताता है कि राष्ट्रीयता की भावना के कारण इन राष्ट्रभक्तों ने अनगिनत कष्ट सहे, फिर भी वे अपने निश्चय पर अटल रहे। उनके त्याग से राष्ट्रीयता का व्यावहारिक रूप स्पष्ट होता है।

चरण 3: निष्कर्ष राष्ट्रीयता देश के लिए जीने, उसकी स्वतंत्रता और विकास के लिए काम करने की भावना है। गद्यांश में चर्चित दो राष्ट्रभक्त महात्मा गांधी और सुभाषचन्द्र बोस हैं।

त्वरित सुझाव: परिभाषा के लिए पहले अनुच्छेद की अंतिम बात और नामों के लिए दूसरे अनुच्छेद का उदाहरण देखिए।

2(छ). राष्ट्रीय बोध का अभाव किन-किन रूपों में दिखाई देता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- राष्ट्रीय बोध देश की एकता और सामूहिक हित के प्रति चेतना है।
- उत्तर के लिए अंतिम अनुच्छेद में दिए गए संघर्षों और उनके कारणों को पहचानना है।

चरण 1: बाहरी रूप पहचानना राष्ट्रीय बोध का अभाव जातिगत और भाषागत भेदभाव तथा भाषा, धर्म और क्षेत्र के आधार पर होने वाले संघर्षों में दिखाई देता है। गद्यांश में कहीं भाषा को लेकर संघर्ष और कहीं धर्म या क्षेत्र के नाम पर लोगों को निकाले जाने की चर्चा है। ये घटनाएँ दिखाती हैं कि लोग देश की व्यापक एकता से अधिक अपनी संकीर्ण पहचान को महत्त्व देने लगते हैं।

चरण 2: मनुष्य की संकुचित दृष्टि से संबंध जोड़ना लेखक के अनुसार आदमी अपने अहं में सिमटता जा रहा है। वह दूसरे मनुष्य से धर्म, जाति और कुल के आधार पर व्यवहार करता है। इससे पारस्परिक स्नेह और एकता घटती है तथा फूट का लाभ उठाने का अवसर दूसरों को मिलता है। इस प्रकार बाहरी संघर्षों के पीछे स्वार्थ और संकीर्ण मानसिकता भी राष्ट्रीय बोध के अभाव का रूप हैं।

चरण 3: निष्कर्ष जाति और भाषा के भेदभाव, भाषायी संघर्ष, धर्म या क्षेत्र के नाम पर लोगों को निकालने तथा व्यक्ति के अपने अहं में सिमटने में राष्ट्रीय बोध का अभाव दिखाई देता है।

त्वरित सुझाव: अंतिम अनुच्छेद से संघर्षों के रूप चुनिए और उन्हें व्यक्ति की संकीर्ण दृष्टि से जोड़कर लिखिए।

2(ज). राष्ट्र के उत्थान में व्यक्ति का क्या स्थान है ? उदाहरण सहित लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- राष्ट्र का उत्थान व्यक्ति की देशहितकारी भावना और कर्म से जुड़ा है।
- उदाहरण गद्यांश में उल्लिखित राष्ट्रभक्तों के आचरण से देना है।

चरण 1: व्यक्ति की भूमिका स्पष्ट करना राष्ट्र के उत्थान में व्यक्ति की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। देश की स्वतंत्रता और विकास के लिए काम करने वाले व्यक्ति ही राष्ट्रीय उन्नति का आधार बनते हैं। उसे धर्म, जाति, कुल और भाषा की संकीर्ण सीमाएँ भुलाकर देश को प्राथमिकता देनी चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर निजी स्वार्थ और अहं का त्याग करना भी इसी भूमिका का अंग है।

चरण 2: गद्यांश से उदाहरण देना महात्मा गांधी, तिलक और सुभाषचन्द्र बोस के कार्य इस भूमिका के उदाहरण हैं। गद्यांश के अनुसार राष्ट्रीयता की भावना के कारण उन्हें अनगिनत कष्ट उठाने पड़े, किंतु वे अपने निश्चय में अटल रहे। उनका आचरण स्पष्ट करता है कि त्याग और दृढ़ संकल्प वाला व्यक्ति राष्ट्रीय स्वतंत्रता तथा विकास के लिए योगदान दे सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष व्यक्ति राष्ट्र के उत्थान का सक्रिय आधार है। देशहित को सर्वोपरि रखकर उसका त्यागपूर्ण कर्म उन्नति में सहायक होता है; गांधी, तिलक और सुभाषचन्द्र बोस का कष्ट सहकर अटल रहना इसका उदाहरण है।

त्वरित सुझाव: भूमिका बताते समय देशहित, संकीर्णता का त्याग और गद्यांश से एक उदाहरण अवश्य जोड़िए।

2(झ). व्यक्तिगत स्वार्थ एवं राष्ट्रीय भावना परस्पर विरोधी तत्त्व हैं । कैसे ? तर्क सहित उत्तर लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यक्तिगत स्वार्थ में निजी हित प्रमुख होता है, जबकि राष्ट्रीय भावना में देशहित को प्राथमिकता मिलती है।
- विरोध को गद्यांश के अहं, संकीर्ण व्यवहार और त्याग संबंधी विचारों से स्पष्ट करना है।

चरण 1: व्यक्तिगत स्वार्थ का प्रभाव बताना व्यक्तिगत स्वार्थ मनुष्य को अपने लाभ और अहं तक सीमित करता है। वह धर्म, जाति, कुल या भाषा के आधार पर दूसरों से व्यवहार करने लगता है। इससे उसकी दृष्टि संकुचित होती है और पारस्परिक एकता में बाधा आती है। गद्यांश में व्यक्ति के अपने अहं में सिमटने को राष्ट्रीय बोध के अभाव से जोड़ा गया है। इस प्रकार निजी हित को सर्वोपरि रखना देश की सामूहिक भावना को कमजोर करता है।

चरण 2: राष्ट्रीय भावना की विपरीत माँग समझाना राष्ट्रीय भावना की अनिवार्य शर्त देश को प्राथमिकता देना है, भले ही व्यक्ति को

अपने स्वार्थ और अहं का त्याग करना पड़े। इसमें सभी संकीर्ण सीमाओं को भुलाकर स्वतंत्रता और विकास के लिए कार्य करना होता है। गांधी, तिलक और सुभाषचन्द्र बोस का कष्ट सहकर अटल रहना इसी का उदाहरण है। जहाँ स्वार्थ निजी सुविधा चाहता है, वहीं राष्ट्रीय भावना देश के लिए त्याग की प्रेरणा देती है।

चरण 3: निष्कर्ष दोनों की प्राथमिकताएँ विपरीत हैं। व्यक्तिगत स्वार्थ अपने लाभ और अहं को आगे रखता है, जबकि राष्ट्रीय भावना निजी स्वार्थ त्यागकर देश की स्वतंत्रता, एकता और विकास को सर्वोपरि मानती है।

त्वरित सुझाव: विरोध सिद्ध करने के लिए दोनों की प्राथमिकता बताइए और देशहित के लिए त्याग का तर्क जोड़िए।

3(क). निम्नांकित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : प्रगति-पथ पर भारत [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में भूमिका, विषय का क्रमबद्ध विस्तार और सार्थक उपसंहार होना चाहिए।
- भारत की प्रगति के साथ शेष चुनौतियों और नागरिक दायित्वों पर संतुलित विचार प्रस्तुत करने हैं।

चरण 1: प्रारूप और विचारों की रूपरेखा शीर्षक के बाद भूमिका में स्वतंत्र भारत के विकास की यात्रा का परिचय दिया जाएगा। मुख्य भाग में कृषि, उद्योग, विज्ञान, शिक्षा और सामाजिक जागृति की चर्चा होगी। इसके बाद गरीबी, बेरोजगारी, असमानता और पर्यावरण की चुनौतियाँ रखी जाएँगी। उपसंहार में समावेशी प्रगति तथा नागरिक कर्तव्य की आवश्यकता बताई जाएगी।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध **प्रगति-पथ पर भारत**

भारत प्राचीन संस्कृति और विशाल संभावनाओं का देश है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उसने अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए विकास की दिशा में उल्लेखनीय कदम बढ़ाए हैं। आज उसकी प्रगति खेतों से लेकर अंतरिक्ष तक दिखाई देती है। यह यात्रा हमारे किसानों, वैज्ञानिकों, शिक्षकों, श्रमिकों और उद्यमियों के सम्मिलित परिश्रम का परिणाम है।

कृषि भारतीय जीवन का महत्त्वपूर्ण आधार है। सिंचाई, उन्नत बीजों और आधुनिक तकनीक के प्रयोग से उत्पादन बढ़ा है। उद्योगों के विस्तार, सड़कों और संचार सुविधाओं के विकास ने व्यापार तथा रोजगार के अवसर बढ़ाए हैं। गाँव और नगर पहले की तुलना में अधिक निकट आए हैं।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत ने अपनी क्षमता सिद्ध की है। अंतरिक्ष अनुसंधान, चिकित्सा और सूचना तकनीक की उपलब्धियाँ आत्मविश्वास जगाती हैं। शिक्षा के प्रसार से नई पीढ़ी के लिए आगे बढ़ने के द्वार खुले हैं। महिलाओं की शिक्षा और सार्वजनिक जीवन में उनकी भागीदारी समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला रही है। लोकतांत्रिक संस्थाएँ भी नागरिकों को देश के निर्माण में सहभागी बनने का अवसर देती हैं।

फिर भी विकास की यात्रा पूरी नहीं हुई है। गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा और सामाजिक असमानता अनेक नागरिकों की प्रगति में बाधक हैं। प्रदूषण तथा प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध उपयोग भविष्य के लिए चुनौती हैं। केवल बड़े भवन या बढ़ता उत्पादन प्रगति का संपूर्ण प्रमाण नहीं हो सकते। विकास का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुँचना चाहिए।

भारत को आगे ले जाने के लिए ईमानदार प्रशासन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, वैज्ञानिक सोच और सामाजिक सद्भाव आवश्यक हैं। नागरिकों को भी श्रम का सम्मान करना, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना और अपने कर्तव्य निभाना चाहिए। युवाओं की ऊर्जा तथा सभी वर्गों की सहभागिता से भारत अधिक समृद्ध, न्यायपूर्ण और आत्मनिर्भर बन सकता है। प्रगति का सच्चा मार्ग वही है जो समृद्धि के साथ मानवता और प्रकृति की रक्षा करे।

चरण 3: निष्कर्ष भारत की वास्तविक प्रगति आर्थिक और वैज्ञानिक उपलब्धियों के साथ सामाजिक न्याय, पर्यावरण संरक्षण तथा हर नागरिक के विकास में निहित है।

त्वरित सुझाव: निबंध में उपलब्धियाँ गिनाने के साथ चुनौतियाँ और उनके समाधान जोड़ने से विचार संतुलित बनते हैं।

3(ख). निम्नांकित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : क्या नहीं कर सकती नारी ? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विषय का केंद्रीय भाव नारी की क्षमता, स्वाधीनता और समान अवसरों की आवश्यकता है। निबन्ध में उपलब्धियों के साथ वास्तविक बाधाओं और उनके समाधान को जोड़ना चाहिए।
- भूमिका, विभिन्न क्षेत्रों में योगदान, बाधाएँ, सुधार के उपाय और निष्कर्ष का क्रम विचारों को स्पष्ट तथा संगठित बनाता है।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति पहले नारी की क्षमताओं पर विश्वास व्यक्त करें। फिर शिक्षा, विज्ञान, प्रशासन, खेल और पारिवारिक जीवन के उदाहरणों से इस विचार को पुष्ट करें। अंत में समान अधिकारों तथा अवसरों को आवश्यक बताते हुए सकारात्मक निष्कर्ष दें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबन्ध क्या नहीं कर सकती नारी ?

नारी केवल परिवार का आधार नहीं, समाज और राष्ट्र के निर्माण की सक्रिय भागीदार भी है। उसकी प्रतिभा किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं है। अवसर, शिक्षा और सहयोग मिलने पर वह हर क्षेत्र में अपनी योग्यता सिद्ध कर सकती है। इसलिए प्रश्न यह होना चाहिए कि समाज उसकी राह की बाधाएँ कब दूर करेगा।

शिक्षा ने महिलाओं के लिए नई संभावनाओं के द्वार खोले हैं। आज वे चिकित्सक, वैज्ञानिक, शिक्षक, प्रशासक और उद्यमी बनकर महत्त्वपूर्ण दायित्व निभा रही हैं। कल्पना चावला का अंतरिक्ष तक पहुँचना इस बात का प्रेरक उदाहरण है कि साहस और परिश्रम के सामने सीमाएँ छोटी पड़ जाती हैं। खेलों में भी भारतीय महिलाओं ने अपनी प्रतिभा और अनुशासन से देश का सम्मान बढ़ाया है।

घर और समाज में उनका योगदान भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। बच्चों के संस्कार, परिवार की देखभाल और आर्थिक प्रबन्ध में उनकी भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है। फिर भी इन कार्यों को केवल स्त्री की जिम्मेदारी मानना उचित नहीं है। घर के काम और पालन-पोषण में पुरुषों की बराबर भागीदारी महिलाओं को आगे बढ़ने का अवसर देती है।

अनेक लड़कियों को आज भी अशिक्षा, असुरक्षा, बाल-विवाह और भेदभाव का सामना करना पड़ता है। इन बाधाओं से उनकी क्षमता का आकलन नहीं किया जा सकता। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सुरक्षित सार्वजनिक स्थान, समान पारिश्रमिक तथा निर्णय लेने की स्वतंत्रता उन्हें मिलनी चाहिए। कानूनों के साथ सामाजिक सोच में परिवर्तन भी आवश्यक है।

नारी को दया की पात्र नहीं, अधिकार-संपन्न व्यक्ति के रूप में स्वीकार करना होगा। उसकी सफलता केवल उसका निजी लाभ नहीं, पूरे समाज की प्रगति है। हम उसकी राह रोकने के स्थान पर उसे आगे बढ़ने दें। तब यह विश्वास और दृढ़ होगा कि नारी अपनी प्रतिभा, श्रम और संकल्प से असंभव प्रतीत होने वाले लक्ष्य भी प्राप्त कर सकती है।

चरण 3: निष्कर्ष इस निबन्ध में नारी की उपलब्धियों को समान अवसर, शिक्षा और सामाजिक सहयोग से जोड़कर प्रस्तुत किया गया है।

त्वरित सुझाव: शीर्षक के प्रश्न का उत्तर उपलब्धियों से दें और अंत में अवसरों की समानता का स्पष्ट आग्रह जोड़ें।

3(ग). निम्नांकित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : बेरोज़गारी की समस्या [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबन्ध में बेरोज़गारी का अर्थ, उसके कारण, व्यक्ति और समाज पर प्रभाव तथा व्यावहारिक समाधान क्रम से प्रस्तुत किए जाते हैं।
- समस्या का विवेचन संतुलित होना चाहिए। केवल जनसंख्या को दोष देने के बजाय शिक्षा, कौशल, रोजगार-सृजन और आर्थिक अवसरों पर भी विचार आवश्यक है।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति भूमिका में काम चाहने पर भी काम न मिलने की स्थिति स्पष्ट करें। मुख्य भाग में कारण और दुष्परिणाम अलग-अलग अनुच्छेदों में रखें। अंतिम भाग में कौशल-विकास, उद्योग, ग्रामीण रोजगार और स्वरोजगार के उपाय सुझाएँ।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबन्ध बेरोज़गारी की समस्या

किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति उसके परिश्रमी नागरिक होते हैं। जब काम करने की इच्छा और योग्यता रखने वाला व्यक्ति उपयुक्त

काम नहीं पाता, तब बेरोज़गारी की समस्या उत्पन्न होती है। इससे केवल उसकी आय नहीं घटती, देश की उत्पादन-क्षमता भी प्रभावित होती है। भारत जैसे युवा जनसंख्या वाले देश के लिए यह विशेष चिंता का विषय है।

इस समस्या के अनेक कारण हैं। रोजगार के अवसरों की तुलना में काम चाहने वालों की संख्या अधिक है। शिक्षा और कार्यक्षेत्र की आवश्यकताओं के बीच अंतर भी बड़ी बाधा है। कई युवाओं के पास प्रमाणपत्र तो होते हैं, पर व्यावहारिक प्रशिक्षण नहीं होता। दूसरी ओर, केवल सरकारी नौकरी को सफलता मानने की मानसिकता भी अवसरों का दायरा संकुचित करती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में खेती पर अत्यधिक निर्भरता और गैर-कृषि कामों की कमी से स्थिति कठिन होती है। कृषि के कुछ काम मौसम के अनुसार मिलते हैं, इसलिए वर्ष भर नियमित आय नहीं मिलती। गाँवों से शहरों की ओर पलायन बढ़ता है, जबकि शहरों में भी सभी को सम्मानजनक रोजगार नहीं मिल पाता। छोटे उद्योगों को पूँजी, बाजार और उचित प्रशिक्षण का अभाव झेलना पड़ता है।

बेरोज़गारी से परिवार की आवश्यकताएँ पूरी करना कठिन हो जाता है। युवा निराशा और आत्मविश्वास की कमी अनुभव कर सकते हैं। आर्थिक असुरक्षा सामाजिक तनाव को भी बढ़ाती है। इसलिए बेरोज़गार व्यक्ति को दोष देने के बजाय उसकी परिस्थितियाँ समझना और अवसर उपलब्ध कराना आवश्यक है।

समाधान के लिए शिक्षा को कौशल और व्यावहारिक अनुभव से जोड़ना होगा। स्थानीय संसाधनों पर आधारित उद्योग, कृषि-प्रसंस्करण और सेवा-क्षेत्र रोजगार बढ़ा सकते हैं। स्वरोजगार चाहने वालों को सुलभ ऋण, प्रशिक्षण और बाजार की जानकारी दी जानी चाहिए। भर्ती-प्रक्रियाएँ पारदर्शी हों तथा महिलाओं और वंचित समूहों को समान अवसर मिलें।

बेरोज़गारी दूर करना सरकार, उद्योग, शिक्षण संस्थाओं और समाज का साझा दायित्व है। श्रम का सम्मान और योग्यतानुसार अवसर मिलने पर युवा आत्मनिर्भर बनेंगे। उनकी ऊर्जा राष्ट्र के विकास में लगेगी और आर्थिक प्रगति का लाभ अधिक लोगों तक पहुँचेगा।

चरण 3: निष्कर्ष बेरोज़गारी के स्थायी समाधान के लिए कौशलयुक्त शिक्षा और व्यापक, सम्मानजनक रोजगार-अवसरों का विस्तार आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: कारण और समाधान आमने-सामने सोचें: कौशल की कमी के साथ प्रशिक्षण तथा ग्रामीण अवसरों की कमी के साथ स्थानीय उद्योग लिखें।

3(घ). निम्नांकित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : क्यों पढ़ें हिंदी ? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विषय भाषा-अध्ययन की उपयोगिता पर तर्कपूर्ण निबन्ध माँगता है। हिंदी का महत्त्व संप्रेषण, साहित्य, संस्कृति और रोजगार के संदर्भ में स्पष्ट किया जाना चाहिए।
- हिंदी के पक्ष में लिखते समय अन्य भाषाओं का सम्मान बनाए रखें। बहुभाषिकता और हिंदी का विकास एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति भूमिका में भाषा और जीवन का संबंध स्थापित करें। फिर हिंदी के व्यापक संपर्क, साहित्यिक संपदा, व्यावहारिक उपयोग और डिजिटल क्षेत्र में उसकी संभावनाएँ बताएँ। निष्कर्ष में हिंदी सीखने को अन्य भाषाओं के ज्ञान के साथ जोड़ें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबन्ध क्यों पढ़ें हिंदी ?

भाषा केवल बातचीत का साधन नहीं, विचारों और अनुभवों की अभिव्यक्ति का माध्यम भी है। उसके द्वारा हम दूसरों को समझते हैं और अपनी संस्कृति से जुड़ते हैं। हिंदी पढ़ना इसलिए उपयोगी है कि वह भारत के बड़े जनसमुदाय से संवाद का अवसर देती है तथा ज्ञान और साहित्य की समृद्ध दुनिया से हमारा परिचय कराती है।

भारत अनेक भाषाओं का देश है। इस विविधता के बीच हिंदी विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को जोड़ने में सहायक होती है। यात्रा, व्यापार, सार्वजनिक जीवन और दैनिक व्यवहार में उसका ज्ञान उपयोगी है। हिंदी पढ़ने से हम केवल बोलना नहीं सीखते, बल्कि स्पष्ट लिखना, ध्यान से पढ़ना और दूसरों के विचार समझना भी सीखते हैं।

हिंदी साहित्य हमारे अनुभवों को विस्तार देता है। कबीर की वाणी सामाजिक भेदभाव पर प्रश्न उठाती है, जबकि प्रेमचंद की रचनाएँ साधारण मनुष्य के संघर्ष से परिचित कराती हैं। कविता, कहानी और नाटक पढ़कर संवेदनशीलता तथा कल्पनाशक्ति विकसित होती है। हम अपने समय की समस्याओं को अधिक गहराई से समझने लगते हैं।

हिंदी का व्यावहारिक महत्त्व भी बढ़ा है। पत्रकारिता, अनुवाद, अध्यापन, विज्ञापन और जनसंचार में अच्छे भाषा-कौशल की आवश्यकता होती है। डिजिटल माध्यमों पर हिंदी सामग्री तैयार करने और संपादित करने के अवसर भी उपलब्ध हैं। स्पष्ट तथा प्रभावशाली हिंदी जानने वाला व्यक्ति जानकारी को अधिक लोगों तक पहुँचा सकता है।

हिंदी पढ़ने का अर्थ अंग्रेज़ी या किसी अन्य भारतीय भाषा का विरोध करना नहीं है। हर भाषा की अपनी समृद्धि और उपयोगिता है। हिंदी के साथ दूसरी भाषाएँ सीखना हमारे ज्ञान और संपर्क को बढ़ाता है। इसी प्रकार हिंदी की प्रगति के लिए सरल, सटीक और सहज भाषा में विज्ञान तथा तकनीक की सामग्री भी तैयार करनी होगी।

हमें हिंदी परीक्षा में अंक पाने के लिए ही नहीं, अपने विचार स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने के लिए पढ़नी चाहिए। नियमित पठन, लेखन और संवाद से भाषा पर अधिकार बढ़ता है। हिंदी का अध्ययन हमें समाज से जोड़ता है, साहित्यिक आनंद देता है और अनेक व्यावहारिक अवसरों के लिए तैयार करता है।

चरण 3: निष्कर्ष हिंदी का अध्ययन संवाद, साहित्यिक संवेदना, सांस्कृतिक समझ और व्यावहारिक अवसरों के लिए उपयोगी है।

त्वरित सुझाव: हिंदी के लाभ चार संदर्भों में बाँटें: संपर्क, साहित्य, संस्कृति और रोजगार; अन्य भाषाओं के प्रति सम्मान बनाए रखें।

---

4. भारतीय युवाओं में क्रिकेट खेल के प्रति अत्यधिक लगाव की चर्चा करते हुए अन्य खेलों के प्रति उदासीनता के बारे में किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को लिखे पत्र में सार्वजनिक समस्या का संतुलित विवेचन तथा व्यावहारिक सुझाव दिए जाते हैं।
- प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन, मुख्य कथ्य तथा समापन औपचारिक पत्र के आवश्यक अंग हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषय-वस्तु की योजना पत्र का उद्देश्य क्रिकेट के प्रति युवाओं के आकर्षण की चर्चा करते हुए अन्य खेलों की उपेक्षा पर ध्यान दिलाना है। क्रिकेट की लोकप्रियता को दोष देने के बजाय खेल-संस्कृति में असंतुलन दिखाना उचित है। मुख्य कथ्य में प्रचार, सुविधाओं और अवसरों की असमानता तथा विद्यालयों, खेल संस्थाओं और मीडिया की भूमिका शामिल होगी। भाषा शिष्ट, स्पष्ट और जनहित की भावना से युक्त रखेंगे।

चरण 2: पूरा आदर्श पत्र 24, विकास नगर

नई दिल्ली

दिनांक: 15 मार्च 2015

सेवा में,

संपादक महोदय,

दैनिक जनवाणी,

नई दिल्ली।

विषय: युवाओं में क्रिकेट के अत्यधिक आकर्षण और अन्य खेलों की उपेक्षा के संबंध में।

महोदय,

आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं भारतीय युवाओं में क्रिकेट के प्रति बढ़ते आकर्षण और अन्य खेलों के प्रति उदासीनता की ओर समाज का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ।

क्रिकेट एक रोचक खेल है और इसकी उपलब्धियाँ देश को गौरव देती हैं। किंतु इसके व्यापक प्रचार, आकर्षक पुरस्कारों और खिलाड़ियों की प्रसिद्धि के कारण बहुत-से युवा अन्य खेलों को कम महत्त्व देते हैं। हॉकी, एथलेटिक्स, कबड्डी और तैराकी जैसी विधाओं की प्रतिभाएँ पर्याप्त सुविधाओं तथा प्रोत्साहन के अभाव में आगे नहीं बढ़ पातीं। खेलों के प्रति ऐसा एकांगी दृष्टिकोण विविध प्रतिभाओं के विकास में बाधक है।

विद्यालयों में विभिन्न खेलों का नियमित प्रशिक्षण हो और स्थानीय स्तर पर प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाएँ। खेल संस्थाएँ योग्य प्रशिक्षक

तथा मैदान उपलब्ध कराएँ। मीडिया अन्य खेलों और उनके खिलाड़ियों की उपलब्धियों को भी उचित स्थान दे। अभिभावक बच्चों को उनकी रुचि और योग्यता के अनुसार खेल चुनने दें।

कृपया इस विषय पर सामग्री प्रकाशित कर संतुलित खेल-संस्कृति को प्रोत्साहित करें। इससे युवाओं को विविध अवसर मिलेंगे और देश का खेल-जगत अधिक समृद्ध होगा।

धन्यवाद।

भवदीय,

अमित कुमार

चरण 3: निष्कर्ष इस पत्र में क्रिकेट की लोकप्रियता स्वीकार करते हुए अन्य खेलों की उपेक्षा का कारण, उसका प्रभाव और सुधार के उपाय शिष्ट भाषा में प्रस्तुत किए गए हैं।

त्वरित सुझाव: संपादक को पत्र लिखते समय समस्या के साथ दो-तीन ठोस उपाय अवश्य दें और व्यक्तिगत शिकायत के बजाय सार्वजनिक हित को केंद्र में रखें।

अथवा

4(OR). दूरदर्शन केन्द्र निदेशक को प्रायोजित कार्यक्रमों की अधिकता एवं उनके गिरते हुए स्तर पर चिंता व्यक्त करते हुए पत्र लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निदेशक को संबोधित पत्र में कार्यक्रमों की गुणवत्ता संबंधी चिंता स्पष्ट, तर्कपूर्ण तथा शिष्ट भाषा में व्यक्त की जाती है।
- औपचारिक प्रारूप के साथ समस्या, दर्शकों पर प्रभाव और सुधार के व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना आवश्यक है।

चरण 1: प्रारूप और कथ्य की योजना यह पत्र दूरदर्शन केंद्र के निदेशक को लिखा जाएगा। विषय में प्रायोजित कार्यक्रमों की अधिकता और उनके गिरते स्तर का उल्लेख होगा। मुख्य कथ्य में व्यावसायिक दबाव, सामग्री की पुनरावृत्ति और शिक्षाप्रद कार्यक्रमों की कमी की चर्चा करेंगे। बिना अप्रमाणित आरोप लगाए जनोपयोगी प्रसारण, गुणवत्ता की समीक्षा तथा दर्शकों की प्रतिक्रिया लेने के सुझाव देंगे।

चरण 2: पूरा आदर्श पत्र 18, शांति विहार

लखनऊ

दिनांक: 15 मार्च 2015

सेवा में,

निदेशक महोदय,

दूरदर्शन केंद्र,

लखनऊ।

विषय: प्रायोजित कार्यक्रमों की अधिकता एवं उनके गिरते स्तर के संबंध में।

महोदय,

मैं आपके केंद्र का नियमित दर्शक हूँ। दूरदर्शन से ज्ञानवर्धक, स्वस्थ और मनोरंजक कार्यक्रमों की अपेक्षा रहती है। किंतु प्रायोजित कार्यक्रमों की अधिकता और उनकी घटती गुणवत्ता देखकर चिंता होती है।

कई कार्यक्रमों में विषयों की पुनरावृत्ति, अनावश्यक सनसनी और विज्ञापनों का दबाव दिखाई देता है। इससे सार्थक मनोरंजन का स्थान व्यावसायिक आकर्षण लेने लगता है। शिक्षा, विज्ञान, साहित्य, लोककला और ग्रामीण जीवन से जुड़े कार्यक्रमों को पर्याप्त अवसर मिलना चाहिए। बच्चों तथा युवाओं के लिए उपयोगी सामग्री की कमी विशेष रूप से खटकती है। सार्वजनिक प्रसारण माध्यम होने के कारण दूरदर्शन की सामाजिक जिम्मेदारी भी महत्त्वपूर्ण है।

निवेदन है कि प्रायोजित कार्यक्रमों के चयन में सामग्री की गुणवत्ता को प्राथमिकता दी जाए। प्रसारण से पूर्व उनकी समीक्षा हो तथा

विज्ञापनों और मूल कार्यक्रम के बीच उचित संतुलन रखा जाए। साहित्यकारों, शिक्षकों और विषय-विशेषज्ञों की सहायता से उपयोगी कार्यक्रम बनाए जाएँ। दर्शकों की प्रतिक्रियाएँ लेकर समय-समय पर सुधार भी किए जाएँ।

आशा है कि आप इस विषय पर ध्यान देकर दूरदर्शन की विश्वसनीयता और कार्यक्रमों की गरिमा बढ़ाने के लिए आवश्यक कदम उठाएँगे।

धन्यवाद।

भवदीय,

सुमित वर्मा

चरण 3: निष्कर्ष पत्र में प्रायोजित कार्यक्रमों की अधिकता तथा गुणवत्ता में गिरावट पर चिंता व्यक्त करते हुए संतुलित, शिक्षाप्रद और उत्तरदायी प्रसारण की माँग की गई है।

त्वरित सुझाव: निदेशक को पत्र में केवल असंतोष न लिखें; गुणवत्ता की समीक्षा, विज्ञापनों का संतुलन और दर्शक-प्रतिक्रिया जैसे सुधार भी सुझाएँ।

5(क). जन संचार के किन्हीं दो कार्यों पर प्रकाश डालिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जनसंचार माध्यम व्यापक जनसमुदाय तक सूचना और विचार पहुँचाते हैं।
- सूचना देना और शिक्षित करना जनसंचार के दो प्रमुख सामाजिक कार्य हैं।

चरण 1: सूचना देना जनसंचार का एक कार्य जनता को देश-विदेश की घटनाओं, सरकारी नीतियों तथा सामाजिक गतिविधियों की जानकारी देना है। समाचार-पत्र, रेडियो और दूरदर्शन लोगों को समसामयिक घटनाओं से परिचित कराते हैं।

चरण 2: शिक्षित करना दूसरा कार्य जनता को शिक्षित और जागरूक करना है। स्वास्थ्य, पर्यावरण, साक्षरता तथा नागरिक अधिकारों से संबंधित सामग्री लोगों की समझ बढ़ाती है और उन्हें जिम्मेदार निर्णय लेने में सहायता देती है।

चरण 3: निष्कर्ष जनसंचार के दो कार्य हैं: घटनाओं की सूचना देना और उपयोगी ज्ञान देकर समाज को शिक्षित तथा जागरूक करना।

त्वरित सुझाव: दो कार्य पूछे जाएँ तो प्रत्येक का नाम और उसका एक स्पष्ट उपयोग लिखें; केवल माध्यमों के नाम गिनाना पर्याप्त नहीं है।

5(ख). इंटरनेट तेजी से लोकप्रिय क्यों हो रहा है ? दो कारण लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इंटरनेट सूचना और संचार का ऐसा माध्यम है जिसमें विभिन्न प्रकार की सामग्री शीघ्र उपलब्ध हो सकती है।
- इसके लोकप्रिय होने के कारण बताते समय गति, व्यापक पहुँच और सहभागिता जैसे गुणों का उल्लेख किया जा सकता है।

चरण 1: तेज और सुलभ सूचना इंटरनेट पर समाचार तथा विविध विषयों की जानकारी बहुत कम समय में प्राप्त की जा सकती है। उपलब्ध संपर्क के माध्यम से उपयोगकर्ता अपनी आवश्यकता की सामग्री खोज सकता है; सूचना पाने के लिए किसी निश्चित प्रसारण-समय की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती।

चरण 2: द्विपक्षीय और बहुमाध्यमीय संचार इंटरनेट पर पाठ, चित्र, ध्वनि तथा वीडियो एक साथ उपलब्ध होते हैं। उपयोगकर्ता संदेश भेज सकता है, प्रतिक्रिया दे सकता है और दूर बैठे लोगों से संवाद कर सकता है। यह सहभागिता उसे आकर्षक और उपयोगी बनाती है।

चरण 3: निष्कर्ष इंटरनेट तेजी से लोकप्रिय है क्योंकि सूचना शीघ्र और सुविधाजनक ढंग से मिलती है तथा पाठ, चित्र, ध्वनि और वीडियो के साथ तत्काल संवाद एवं प्रतिक्रिया संभव होती है।

त्वरित सुझाव: दो कारणों को अलग रखें: पहले सूचना की गति और सुविधा बताएँ, फिर संवाद तथा बहुमाध्यमीय सामग्री की विशेषता लिखें।

5(ग). खोजी पत्रकारिता का क्या आशय है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- खोजी पत्रकारिता का आधार छिपे हुए तथ्यों की पड़ताल और प्रमाणों से उनकी सत्यता की पुष्टि करना है।
- इसका उद्देश्य जनहित से जुड़े ऐसे मामलों को उजागर करना है जो सामान्य समाचार-संग्रह से सामने नहीं आते।

चरण 1: अर्थ स्पष्ट करना खोजी पत्रकारिता वह पत्रकारिता है जिसमें पत्रकार गहन छानबीन करके छिपाए गए तथ्यों, अनियमितताओं या भ्रष्टाचार को सामने लाता है। वह केवल किसी के आरोप को दोहरा देने तक सीमित नहीं रहता।

चरण 2: पड़ताल और प्रमाण का महत्त्व इसमें दस्तावेजों, विश्वसनीय स्रोतों और अन्य साक्ष्यों की जाँच की जाती है, ताकि प्रकाशित निष्कर्ष तथ्यपरक हों। उदाहरण के लिए, सार्वजनिक धन के दुरुपयोग की प्रमाणों सहित पड़ताल खोजी पत्रकारिता है। जनहित और सत्यापन इसकी प्रमुख कसौटियाँ हैं।

चरण 3: निष्कर्ष जनहित में छिपे तथ्यों या अनियमितताओं की गहन जाँच कर प्रमाणों के आधार पर उन्हें उजागर करना खोजी पत्रकारिता कहलाता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में छिपे तथ्य, गहन जाँच और प्रमाण—इन तीन बातों को जोड़ें; केवल सनसनी फैलाना खोजी पत्रकारिता नहीं है।

5(घ). संपादन के किन्हीं दो सिद्धांतों का उल्लेख कीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादन में समाचार के तथ्यों, प्रस्तुति और भाषा की जाँच की जाती है।
- तथ्यपरकता और निष्पक्षता समाचार की विश्वसनीयता के प्रमुख आधार हैं।

चरण 1: तथ्यपरकता का सिद्धांत समाचार में दिए गए तथ्य, नाम, स्थान, तिथियाँ और आँकड़े सही तथा सत्यापित होने चाहिए। संपादक को अपुष्ट सूचना या अफवाह को तथ्य के रूप में प्रस्तुत नहीं करना चाहिए। इससे पाठक तक प्रामाणिक जानकारी पहुँचती है।

चरण 2: निष्पक्षता का सिद्धांत समाचार को किसी व्यक्ति, दल या समूह के प्रति पूर्वाग्रह से मुक्त रखकर प्रस्तुत करना चाहिए। संबंधित पक्षों को उचित स्थान दिया जाए और संपादक की निजी पसंद या नापसंद समाचार पर हावी न हो।

चरण 3: निष्कर्ष संपादन के दो सिद्धांत हैं—तथ्यपरकता और निष्पक्षता।

त्वरित सुझाव: दो सिद्धांत लिखते समय उनके नाम के साथ एक संक्षिप्त अर्थ भी दें।

5(ङ). फ्री-लांसर से आप क्या समझते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारों का वर्गीकरण समाचार संस्थान के साथ उनके कार्य-संबंध के आधार पर किया जाता है।
- फ्री-लांसर स्वतंत्र रूप से अलग-अलग संस्थानों को पत्रकारिता संबंधी सामग्री उपलब्ध कराता है।

चरण 1: कार्य-संबंध स्पष्ट करना फ्री-लांसर किसी एक समाचार-पत्र, पत्रिका या समाचार संस्थान का नियमित वेतनभोगी कर्मचारी नहीं होता। वह स्वतंत्र रूप से कार्य करता है और अपनी रुचि तथा विशेषज्ञता के अनुसार विषय चुन सकता है।

चरण 2: सामग्री और पारिश्रमिक बताना वह विभिन्न समाचार-पत्रों या पत्रिकाओं के लिए समाचार, लेख, फ़ीचर अथवा अन्य सामग्री तैयार करता है। संस्थान उसकी स्वीकृत सामग्री के लिए निर्धारित पारिश्रमिक देते हैं। उसका संबंध स्थायी नौकरी के बजाय स्वतंत्र योगदान

का होता है।

चरण 3: निष्कर्ष फ्री-लांसर वह स्वतंत्र पत्रकार है जो किसी एक संस्थान का स्थायी कर्मचारी न होकर विभिन्न संस्थानों को सामग्री देकर पारिश्रमिक प्राप्त करता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में स्वतंत्र कार्य, अनेक संस्थानों को योगदान और पारिश्रमिक—ये तीन बातें जोड़ें।

6. 'आँखों देखा जलप्रलय' पर एक आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में विषय का व्यवस्थित विवेचन, अनुभव और विचार एक क्रम में प्रस्तुत किए जाते हैं।
- आँखों देखे प्रसंग में प्रत्यक्ष दृश्य, मानवीय संवेदना और आपदा से मिलने वाली सीख का संतुलन आवश्यक है।

चरण 1: प्रारूप और विषय-योजना आलेख का शीर्षक विषयानुकूल होगा और उसके नीचे लेखक का नाम आएगा। आरंभ में बाढ़ की स्थिति, मध्य में प्रत्यक्ष दृश्य तथा बचाव-कार्य और अंत में कारणों एवं समाधान की चर्चा करेंगे। घटनाओं का वर्णन प्रथम पुरुष में होगा, जिससे आँखों देखे अनुभव की आत्मीयता बनी रहे।

चरण 2: अनुभव को क्रम देना पहले लगातार वर्षा और बढ़ते जलस्तर की पृष्ठभूमि रखेंगे। फिर डूबती बस्ती, लोगों की विवशता, राहतकर्मियों के साहस तथा पड़ोसियों के सहयोग को जोड़ेंगे। वर्णन में सनसनी फैलाने के स्थान पर पीड़ितों की गरिमा और सहायता की आवश्यकता को प्रमुखता देंगे।

चरण 3: पूर्ण आदर्श आलेख आँखों देखा जलप्रलय

लेखक : एक विद्यार्थी

तीन दिनों से वर्षा थमने का नाम नहीं ले रही थी। हमारे कस्बे के पास बहने वाली नदी उफान पर थी। सुबह जब मैं छत पर पहुँचा, तो गलियों की जगह पानी की मटमैली धाराएँ दिखाई दीं। कुछ ही घंटों में पानी घरों के भीतर घुस आया। परिचित बस्ती का यह अनजाना रूप देखकर मन काँप उठा।

सामने वाले मकान की छत पर एक परिवार सहायता की प्रतीक्षा कर रहा था। एक बुजुर्ग अपनी दवाइयों की चिंता कर रहे थे और बच्चे भूख से रो रहे थे। दूर बहती चारपाइयाँ, टूटे दरवाजे और डूबे खेत विनाश की कहानी कह रहे थे। लोगों की वर्षों की कमाई देखते-देखते पानी में समा गई थी।

इसी बीच राहतकर्मी नाव लेकर पहुँचे। उन्होंने पहले बच्चों, बुजुर्गों और बीमारों को सुरक्षित निकाला। पड़ोस के युवकों ने भी रस्सियाँ बाँधकर लोगों को सहारा दिया। विद्यालय में बनाए गए आश्रय-स्थल पर स्वयंसेवक भोजन, पानी और दवाइयाँ बाँट रहे थे। संकट की उस घड़ी में अनजान लोग भी एक-दूसरे के अपने बन गए थे।

पानी उतरने पर कीचड़, टूटी दीवारें और दूषित कुएँ नई चुनौतियाँ लेकर आए। अब सफाई, स्वच्छ पेयजल और रोगों से बचाव की तत्काल आवश्यकता थी। मैंने समझा कि बचाव के साथ पुनर्वास भी उतना ही आवश्यक है।

इस जलप्रलय ने हमें चेताया कि नदियों के रास्ते रोकना, जलनिकासी की उपेक्षा करना और अनियोजित निर्माण भारी पड़ सकते हैं। समय पर चेतावनी, सुरक्षित आश्रय, नियमित अभ्यास और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी से नुकसान घटाया जा सकता है। प्रकृति के साथ संतुलन और संकट में मानवीय सहयोग ही सुरक्षित भविष्य का आधार हैं।

चरण 4: निष्कर्ष यह आलेख बाढ़ के प्रत्यक्ष अनुभव, राहत एवं पुनर्वास और भविष्य की तैयारी को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: आँखों देखे आलेख में पहले दृश्य दिखाएँ, फिर मानवीय अनुभव जोड़ें और अंत में उपयोगी सीख दें।

अथवा

6(OR-1). 'टूटते-बिखरते रिश्ते' पर एक आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सामाजिक विषय के आलेख में समस्या, कारण, प्रभाव और समाधान का तार्किक क्रम रखा जाता है।
- रिश्तों के विश्लेषण में संवेदना, संवाद और पारस्परिक सम्मान को केंद्र में रखना चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और सामग्री की योजना शीर्षक और लेखक के नाम के बाद विषय की भूमिका देंगे। मध्य भाग में संबंधों में बढ़ती दूरी के कारण तथा उसके प्रभाव समझाएँगे। अंतिम भाग में ऐसे व्यावहारिक उपाय देंगे जिनसे परिवार और समाज में आत्मीयता मजबूत हो सके।

चरण 2: संतुलित विवेचन की दिशा व्यस्तता, स्वार्थ, अहंकार और संवाद की कमी के उदाहरण लिए जाएँगे। सभी टूटते रिश्तों का दोष किसी एक पीढ़ी या तकनीक पर नहीं डालेंगे। स्वस्थ संबंधों में अपनापन जितना आवश्यक है, उतना ही व्यक्ति की गरिमा और स्वतंत्रता का सम्मान भी आवश्यक है।

चरण 3: पूर्ण आदर्श आलेख टूटते-बिखरते रिश्ते

लेखक : एक विद्यार्थी

रिश्ते मनुष्य को भावनात्मक सहारा देते हैं। परिवार, मित्रता और पड़ोस के संबंध हमारे जीवन में विश्वास तथा अपनापन भरते हैं। फिर भी आज अनेक लोग अपनों के बीच रहते हुए अकेलापन अनुभव करते हैं। सुविधाएँ बढ़ी हैं, पर कई घरों में साथ बैठकर बात करने का समय घट गया है। यह स्थिति हमें अपने व्यवहार पर विचार करने को प्रेरित करती है।

रिश्तों में दूरी का एक प्रमुख कारण संवाद का अभाव है। काम की व्यस्तता और प्रतिस्पर्धा के बीच हम मान लेते हैं कि अपने लोग हमारी परेशानी स्वयं समझ लेंगे। छोटी शिकायतें अनकही रह जाती हैं और धीरे-धीरे अविश्वास का रूप ले लेती हैं। मोबाइल पर दूर के परिचितों से संपर्क बना रहता है, जबकि सामने बैठे व्यक्ति की बात अधूरी रह जाती है। समस्या साधन में नहीं, उसके असंतुलित उपयोग में है।

अहंकार और अत्यधिक अपेक्षाएँ भी संबंधों को कमजोर करती हैं। जब हर व्यक्ति केवल अपना पक्ष सही मानता है, तब समझौते की गुंजाइश घटती है। कभी संपत्ति का विवाद, कभी दूसरों से तुलना और कभी पीढ़ियों के बदलते विचार परिवारों में तनाव पैदा करते हैं। इसका प्रभाव बच्चों और बुजुर्गों पर विशेष रूप से पड़ता है।

रिश्ते बचाने के लिए बड़ी घोषणाओं से अधिक छोटे प्रयास आवश्यक हैं। प्रतिदिन कुछ समय बिना व्यवधान के बातचीत करना, ध्यान से सुनना, गलती स्वीकार करना और सहायता के लिए आगे आना विश्वास बढ़ाते हैं। मतभेद होने पर अपमान के बजाय तर्क और धैर्य से बात होनी चाहिए। साथ ही किसी संबंध को बचाने के नाम पर हिंसा या लगातार अपमान सहना उचित नहीं है; सुरक्षा और आत्मसम्मान का संरक्षण भी जरूरी है।

रिश्ते अधिकार जताने से नहीं, जिम्मेदारी निभाने से मजबूत होते हैं। यदि हम दूसरों की भावनाओं और सीमाओं का सम्मान करें, तो बिखरते संबंधों में फिर आत्मीयता लौट सकती है। संवेदना, समय और ईमानदार संवाद ही रिश्तों की असली पूँजी हैं।

चरण 4: निष्कर्ष आलेख रिश्तों में दूरी के कारणों का विवेचन करते हुए संवाद, संवेदना, सम्मान और साझा समय को सुधार के आधार के रूप में प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: सामाजिक आलेख में समस्या बताकर न रुकें; उसके कारण, प्रभाव और अपनाए जा सकने वाले समाधान भी लिखें।

अथवा

6(OR-2). हाल ही में पढ़े किसी मनोरंजक कहानी संग्रह की समीक्षा कीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पुस्तक-समीक्षा में पुस्तक और लेखक का परिचय देकर उसकी विषयवस्तु, भाषा, प्रभाव तथा उपयोगिता का संतुलित मूल्यांकन किया जाता है।
- कहानी-संग्रह की समीक्षा में कथानकों का पूरा अंत बताने के बजाय प्रतिनिधि कहानियों की विशेषताएँ और पाठकीय अनुभव सामने रखना चाहिए।

चरण 1: समीक्षा की रूपरेखा प्रेमचंद के कहानी-संग्रह 'मानसरोवर' को समीक्षा का आधार बनाया गया है। पहले संग्रह का परिचय, फिर प्रमुख कहानियों के आधार पर कथावस्तु और भाषा का मूल्यांकन तथा अंत में पाठकीय अनुशंसा दी जाएगी। मनोरंजन को केवल हँसी तक सीमित न रखकर कथा की रोचकता और जीवन की समझ से जोड़ा जाएगा।

चरण 2: पूर्ण नमूना समीक्षा मानसरोवर : जीवन की रोचक और मार्मिक कहानियाँ

हाल ही में मैंने प्रेमचंद के कहानी-संग्रह 'मानसरोवर' की कुछ कहानियाँ पढ़ीं। इन कहानियों में सामान्य मनुष्यों का जीवन इतनी सहजता से सामने आता है कि पढ़ते समय लगता है, पात्र हमारे आसपास ही रहते हैं। घटनाओं की रोचकता पाठक को बाँधे रखती है और उनके पीछे छिपे सामाजिक प्रश्न सोचने के लिए प्रेरित करते हैं।

'ईदगाह' में नन्हे हामिद का अपनी दादी के लिए चिमटा खरीदना बालमन की संवेदनशीलता को उजागर करता है। 'पूस की रात' में हल्कू का अनुभव किसान की कठिनाइयों से परिचित कराता है। 'नमक का दारोगा' में ईमानदारी और धनबल के टकराव से कथा में उत्सुकता बनी रहती है। इन कहानियों की सबसे बड़ी शक्ति उनके जीवंत पात्र हैं। वे अपनी इच्छाओं, कमजोरियों और परिस्थितियों के साथ विश्वसनीय लगते हैं।

प्रेमचंद की भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और पात्रों के अनुकूल है। संवाद कथा को स्वाभाविक गति देते हैं। हास्य और व्यंग्य के साथ करुणा का मेल पाठकीय अनुभव को समृद्ध बनाता है। कहीं-कहीं पुराने शब्दों या तत्कालीन सामाजिक संदर्भों को समझने के लिए थोड़ी सावधानी चाहिए, पर इससे कथाओं का आकर्षण कम नहीं होता।

यह संग्रह मनोरंजन के साथ मनुष्य और समाज को समझने का अवसर देता है। संवेदनशील तथा विचारशील कहानियाँ पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए यह उपयोगी और यादगार पाठ है।

चरण 3: निष्कर्ष इस समीक्षा में संग्रह के परिचय, प्रतिनिधि कहानियों, भाषा-शैली, सीमा और पाठकीय उपयोगिता का संतुलित विवेचन हुआ है।

त्वरित सुझाव: समीक्षा में केवल कहानी का सार न लिखें; उदाहरण देकर अपनी प्रशंसा या सीमा का कारण भी स्पष्ट करें।

7. 'जंक फूड की समस्या' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर तथ्यपरक विषय को दृश्यात्मक शुरुआत, मानवीय अनुभव और रोचक भाषा के सहारे प्रस्तुत करता है।
- समस्या पर लिखते हुए उसके कारण, जीवन पर प्रभाव और व्यवहार में अपनाए जा सकने वाले उपाय परस्पर जुड़े होने चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना आकर्षक शीर्षक तथा लेखक के नाम के बाद विद्यालय की छुट्टी का परिचित दृश्य लिया जाएगा। स्वाद और सुविधा के आकर्षण से समस्या की ओर बढ़कर भोजन की आदतों, परिवार तथा विद्यालय की भूमिका का वर्णन होगा। कोई मनगढ़ंत आँकड़ा, चिकित्सकीय दावा या काल्पनिक विशेषज्ञ का उद्धरण नहीं दिया जाएगा।

चरण 2: पूर्ण नमूना फ़ीचर स्वाद की चमक में छिपती सेहत लेखक : एक विद्यार्थी

छुट्टी की घंटी बजते ही स्कूल के बाहर चिप्स के पैकेट खड़खड़ाने लगते हैं। किसी के हाथ में बर्गर है, तो किसी के हाथ में ठंडा मीठा पेय। घर से आया टिफिन कई बार बैग में ही पड़ा रह जाता है। खाने का यह दृश्य बताता है कि जंक फूड हमारी दिनचर्या में कितनी सहजता से जगह बना चुका है।

चटपटा स्वाद, आकर्षक पैकिंग और तुरंत उपलब्ध होने की सुविधा बच्चों को खींचती है। विज्ञापनों और दोस्तों की पसंद का प्रभाव भी कम नहीं है। धीरे-धीरे कभी-कभार का नाश्ता नियमित भोजन की जगह लेने लगता है। अधिक नमक, चीनी या वसा वाले खाद्य पदार्थों पर लगातार निर्भर रहना संतुलित भोजन की आदत को कमजोर करता है। पेट भर जाता है, पर फल, सब्जियाँ और घर के विविध व्यंजन पीछे छूट जाते हैं।

समाधान केवल डाँटने या पैकेट छीन लेने में नहीं है। बच्चों को भोजन चुनने की समझ देना जरूरी है। घर में स्वादिष्ट और पौष्टिक विकल्प तैयार हों। टिफिन में विविधता आए और विद्यालय की कैंटीन में फल, अंकुरित अनाज तथा ताजा भोजन आसानी से मिले। परिवार साथ बैठकर खाए तो स्वस्थ आदतों को सहारा मिलता है।

स्वाद जीवन का आनंद है, पर वही हमारे भोजन का एकमात्र आधार नहीं हो सकता। अगली बार पैकेट खोलने से पहले अपने टिफिन को भी अवसर दीजिए। सेहत की अच्छी शुरुआत रोज के छोटे चुनावों से होती है।

चरण 3: निष्कर्ष फ़ीचर में परिचित दृश्य से शुरुआत करके जंक फूड के आकर्षण, असंतुलित आदतों और व्यावहारिक सुधारों को रोचक ढंग से जोड़ा गया है।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर की शुरुआत किसी परिचित दृश्य से करें और अंत में पाठक को एक सरल, अपनाने योग्य कदम दें।

अथवा

7(OR). 'स्वच्छता अभियान' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर में किसी सामाजिक विषय की मानवीय तस्वीर उभरती है; शीर्षक, जीवंत आरंभ और सहज प्रवाह उसे साधारण सूचना से अलग बनाते हैं।
- स्वच्छता अभियान की सफलता व्यक्तिगत व्यवहार, सामुदायिक सहयोग तथा नियमित सफाई और कचरा-प्रबंधन की व्यवस्था पर निर्भर करती है।

चरण 1: प्रारूप और सामग्री की योजना शीर्षक और लेखक के नाम के बाद मोहल्ले की सफाई का दृश्य रखा जाएगा। फिर अभियान को रोज की आदत से जोड़ते हुए गीले-सूखे कचरे के पृथक्करण, सार्वजनिक सुविधाओं तथा नागरिक और प्रशासन की साझी जिम्मेदारी पर बात होगी। अंत पाठक की भागीदारी जगाएगा।

चरण 2: पूर्ण नमूना फ़ीचर झाड़ू से आगे की सफाई लेखक : एक विद्यार्थी

सुबह की हल्की धूप में मोहल्ले के लोग झाड़ू लेकर निकले हैं। बच्चे खाली बोतलें समेट रहे हैं और बड़े सड़क के किनारे जमा कचरा हटा रहे हैं। कुछ ही देर में गली का चेहरा बदल जाता है। दृश्य उत्साह जगाता है, लेकिन एक सवाल भी उठाता है—क्या यह गली कल भी ऐसी ही दिखेगी?

स्वच्छता अभियान की असली परीक्षा आयोजन के बाद शुरू होती है। सड़क पर कूड़ा फेंकने की आदत बनी रहे तो एक दिन की मेहनत टिक नहीं सकती। घर साफ करके कचरा बाहर डाल देना पूरे परिवेश को स्वच्छ नहीं बनाता। साफ नालियाँ, उपयोग योग्य सार्वजनिक शौचालय और नियमित कचरा-संग्रह भी उतने ही जरूरी हैं।

परिवर्तन की शुरुआत घर से हो सकती है। गीला और सूखा कचरा अलग रखा जाए। बाजार जाते समय अपना थैला ले जाया जाए। विद्यालय में बच्चे केवल नारे न लगाएँ, बल्कि कक्षा और खेल के मैदान को साफ रखने की जिम्मेदारी भी बाँटें। सफाईकर्मियों के श्रम का सम्मान किया जाए और उन्हें सुरक्षित कार्य-साधन मिलें। नागरिकों के प्रयास के साथ स्थानीय प्रशासन की नियमित व्यवस्था जुड़ना आवश्यक है।

स्वच्छता केवल तस्वीर खिंचवाने का अवसर नहीं, साझा जीवन को बेहतर बनाने की आदत है। जब हम अपना कचरा सही जगह डालते

हैं और सार्वजनिक स्थान को भी अपना मानते हैं, तभी अभियान आगे बढ़ता है। चमकती हुई गली की सबसे अच्छी तस्वीर वह होगी जो अगले दिन भी वैसी ही दिखाई दे।

चरण 3: निष्कर्ष फ़ीचर स्वच्छता अभियान को एक दिन के आयोजन से आगे ले जाकर नियमित आदत, सामुदायिक भागीदारी और प्रशासनिक व्यवस्था से जोड़ता है।

त्वरित सुझाव: स्वच्छता पर लिखते समय केवल नारे न दें; घर, विद्यालय और सार्वजनिक स्थान से ठोस उदाहरण चुनें।

---

8. ज़िन्दगी में जो कुछ है, जो भी है
सहर्ष स्वीकारा है;
इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
वह तुम्हें प्यारा है ।
गरबीली गरीबी यह, ये गंभीर अनुभव सब
यह विचार-वैभव सब
दृढ़ता यह, भीतर की सरिता यह, अभिनव सब
मौलिक है, मौलिक है
इसलिए कि पल-पल में
जो कुछ भी जाग्रत है अपलक है
संवेदन तुम्हारा है । [8 अंक]

8(क). कवि जीवन की प्रत्येक परिस्थिति को सहर्ष स्वीकार क्यों करता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में जीवन की स्वीकृति का आधार प्रिय का स्नेह और संवेदन है।
- उत्तर के प्रत्येक निष्कर्ष को दिए गए काव्यांश के भाव और शब्दों से जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: कथन का पाठगत आधार कवि कहता है कि जीवन में जो कुछ उसका अपना है, वह उसके प्रिय को प्यारा है। इसलिए वह अपनी परिस्थितियों को अस्वीकार करने अथवा उनसे शिकायत करने के बजाय प्रसन्न मन से अपनाता है। उसका स्वीकार किसी विवशता से पैदा नहीं हुआ है; उसमें प्रिय के प्रति आत्मीयता और विश्वास है।

चरण 2: स्वीकार का कारण गरीबी, गंभीर अनुभव, विचारों की समृद्धि, दृढ़ता और अंतर्मन की भावना सभी में कवि प्रिय की संवेदना अनुभव करता है। प्रिय का स्नेह जीवन के सुख और कठिनाई दोनों को अर्थ देता है। इस आत्मीय संबंध के कारण उसे जीवन की प्रत्येक परिस्थिति मूल्यवान लगती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि जीवन की प्रत्येक परिस्थिति सहर्ष स्वीकार करता है क्योंकि उसका समस्त अपना प्रिय को प्यारा है और उसमें प्रिय की संवेदना बसी है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में प्रिय का स्नेह और जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में उसकी संवेदना, इन दोनों को जोड़िए।

8(ख). गरीबी के लिए प्रयुक्त विशेषण का औचित्य और सौंदर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विशेषण का औचित्य उसके प्रसंगगत अर्थ तथा काव्यगत प्रभाव से स्पष्ट होता है।
- उत्तर के प्रत्येक निष्कर्ष को दिए गए काव्यांश के भाव और शब्दों से जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: विशेषण पहचानना कवि ने गरीबी के लिए गरबीली विशेषण प्रयुक्त किया है। यहाँ इसका अर्थ गर्व और स्वाभिमान से युक्त है। साधनों की कमी के बावजूद कवि आत्मसम्मान नहीं खोता। उसकी गरीबी उसे दीन, पराधीन या आत्महीन नहीं बनाती, इसलिए यह विशेषण उसके जीवनानुभव के अनुरूप है।

चरण 2: औचित्य और सौंदर्य सामान्यतः गरीबी के साथ अभाव और लाचारी जुड़ते हैं, किंतु कवि उसे स्वाभिमान से जोड़कर एक नया अर्थ देता है। गरबीली गरीबी में विरोधाभास का सौंदर्य है; एक साथ आए दोनों शब्द ध्वनि की समानता से भी प्रभाव बढ़ाते हैं। यह प्रयोग कवि की आंतरिक समृद्धि को बाहरी अभाव से ऊपर स्थापित करता है।

चरण 3: निष्कर्ष गरबीली विशेषण गरीबी में भी बने हुए आत्मसम्मान को व्यक्त करता है। विरोधाभासपूर्ण प्रयोग से गरीबी का गरिमामय और सकारात्मक रूप उभरता है।

त्वरित सुझाव: विशेषण का केवल अर्थ न लिखें; बताइए कि वह गरीबी को स्वाभिमान से जोड़कर नया सौंदर्य कैसे देता है।

8(ग). कवि किन्हें नवीन और मौलिक मानता है तथा क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में वस्तुओं की सूची तथा उनके मौलिक होने का कारण अलग-अलग पहचानना चाहिए।
- उत्तर के प्रत्येक निष्कर्ष को दिए गए काव्यांश के भाव और शब्दों से जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: नवीन और मौलिक तत्व कवि अपनी गरबीली गरीबी, गंभीर जीवनानुभव, विचारों के वैभव, दृढ़ता तथा भीतर बहती भावनाओं की सरिता को नवीन और मौलिक मानता है। ये उसके व्यक्तित्व की आंतरिक संपदा हैं। आर्थिक अभाव के साथ वैचारिक और भावात्मक समृद्धि का उल्लेख करके वह अपने जीवन की विशिष्टता प्रकट करता है।

चरण 2: मौलिकता का कारण ये अनुभव और भाव उसके अपने जीवन में अर्जित हुए हैं; वे किसी और से उधार ली हुई बातें नहीं हैं। उनमें पल-पल प्रिय की संवेदना जागती रहती है। प्रिय की आत्मीय प्रेरणा से उसके अंतर्मन में उठने वाला यह भावप्रवाह नया और अपना है। इसी कारण वह बार-बार उन्हें मौलिक कहता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि गरीबी, गंभीर अनुभवों, विचार-वैभव, दृढ़ता और अंतर्मन की भावसरिता को नवीन तथा मौलिक मानता है, क्योंकि वे उसके निजी अनुभव हैं और प्रिय की संवेदना से अनुप्राणित हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में अनुभवों की पूरी सूची के बाद उनकी निजी अनुभूति और प्रिय की संवेदना का संबंध स्पष्ट कीजिए।

8(घ). 'जो कुछ भी मेरा है वह तुम्हें प्यारा है' – इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पंक्ति का आशय उसके पहले और बाद के भावों के संबंध से खुलता है।
- उत्तर के प्रत्येक निष्कर्ष को दिए गए काव्यांश के भाव और शब्दों से जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: कथन का सीधा आशय कवि का कहना है कि उसके जीवन की सभी स्थितियाँ और अनुभव उसके प्रिय को प्यारे हैं। प्रिय केवल उसकी सफलताओं या सुखों से नहीं जुड़ा है; उसकी गरीबी, कठिन अनुभव और भीतर की भावनाएँ भी उस आत्मीयता में शामिल हैं। इस प्रकार कथन संपूर्ण व्यक्तित्व की स्वीकृति व्यक्त करता है।

चरण 2: आत्मीयता का प्रभाव प्रिय का यह स्नेह कवि को अपने जीवन से संतोष और जुड़ाव देता है। जिसे प्रिय ने प्रेमपूर्वक स्वीकार किया है, उसे कवि भी प्रसन्नता से स्वीकार करता है। उसे अपनी आंतरिक दृढ़ता और विचार-संपदा में प्रिय की संवेदना दिखाई देती है। पंक्ति में दोनों के बीच गहरे विश्वास और भावात्मक एकता का संकेत है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि प्रिय कवि को उसके समस्त सुख-दुख, अभाव और अनुभवों सहित प्रेम करता है; इस आत्मीय स्वीकृति से कवि अपना पूरा जीवन सहर्ष अपनाता है।

त्वरित सुझाव: इस पंक्ति की व्याख्या में केवल प्रेम का उल्लेख न करें; संपूर्ण जीवन की स्वीकृति का भाव भी दिखाइए।

अथवा

8. पतंगों के साथ वे भी उड़ रहे हैं
अपने रंध्रों के सहारे
अगर वे कभी गिरते हैं छतों के खतरनाक किनारों से
और बच जाते हैं तब तो
और भी निडर होकर सुनहले सूरज के सामने आते हैं
पृथ्वी और भी तेज घूमती हुई आती है
उनके बेचैन पैरों के पास । [8 अंक]

8(क). सुनहले सूरज के सामने आने से कवि का क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में सूरज के सामने आना बच्चों की निर्भीकता और उत्साह का बिंब है।
- उत्तर के प्रत्येक निष्कर्ष को दिए गए काव्यांश के भाव और शब्दों से जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग का आधार बच्चे पतंग उड़ाने में इतने तल्लीन हैं कि छत के खतरनाक किनारों तक पहुँच जाते हैं। कभी गिरकर बच जाने पर वे सहमकर खेल छोड़ नहीं देते। इसके विपरीत उनका साहस और बढ़ जाता है। और भी निडर शब्द इस बदली हुई प्रतिक्रिया को सीधे स्पष्ट करते हैं।

चरण 2: सुनहले सूरज का आशय सुनहले सूरज के सामने आना खुले आकाश और उजाले में फिर से पूरे उत्साह से सक्रिय होना है। तेजस्वी सूरज का सामना करने का बिंब बच्चों की निर्भीकता को सशक्त बनाता है। वे खतरे के अनुभव के बाद भी आत्मविश्वास से भरकर पतंग उड़ाने लगते हैं। इसे सूरज के पास वास्तव में पहुँच जाना नहीं समझना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष कवि का आशय है कि गिरकर बचने के बाद बच्चे और अधिक निडर, उत्साही तथा आत्मविश्वासी होकर खुले आकाश में फिर पतंग उड़ाने लगते हैं।

त्वरित सुझाव: सूरज के बिंब को बच्चों के बढ़े साहस से जोड़ें और और भी निडर पद को प्रमाण बनाइए।

8(ख). गिरकर बचने पर बच्चों में क्या प्रतिक्रिया होती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बच्चों की प्रतिक्रिया काव्यांश के और भी निडर पद से स्पष्ट होती है।
- उत्तर के प्रत्येक निष्कर्ष को दिए गए काव्यांश के भाव और शब्दों से जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: घटना और तत्काल प्रतिक्रिया पतंग उड़ाते समय बच्चे कभी छतों के खतरनाक किनारों से गिरते हैं और बच जाते हैं। ऐसी घटना के बाद उनसे डरने या खेल छोड़ने की अपेक्षा हो सकती है, पर कविता में उनकी प्रतिक्रिया इसके उलट है। वे अपने बच जाने को अनुभव करके पहले से अधिक साहसी हो उठते हैं।

चरण 2: उत्साह का बढ़ना कवि कहता है कि वे और भी निडर होकर सुनहले सूरज के सामने आते हैं। इसका अर्थ है कि वे नए आत्मविश्वास के साथ फिर पतंग उड़ाने में जुट जाते हैं। खेल का आकर्षण और उनके मन की उमंग भय पर हावी रहती है। उनके बेचैन पैर इसी बढ़ी हुई सक्रियता और आगे बढ़ने की चाह को व्यक्त करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष गिरकर बचने पर बच्चे भयभीत होने के बजाय अधिक निडर और आत्मविश्वासी हो जाते हैं तथा दुगुने उत्साह से फिर पतंग उड़ाने लगते हैं।

त्वरित सुझाव: प्रतिक्रिया बताते समय घटना दोहराने तक सीमित न रहें; भय घटने और उत्साह बढ़ने का परिवर्तन दिखाइए।

8(ग). पैरों को बेचैन क्यों कहा गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शारीरिक गति के बिंब से कवि बच्चों के मन का उत्साह और चंचलता व्यक्त करता है।
- उत्तर के प्रत्येक निष्कर्ष को दिए गए काव्यांश के भाव और शब्दों से जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: बेचैनी का कारण बच्चे पतंग उड़ाने में पूरे मन से लगे हुए हैं। आकाश में उड़ती पतंग की बदलती दिशा के साथ वे भी लगातार दौड़ते और अपनी जगह बदलते हैं। उनकी उमंग उन्हें स्थिर नहीं रहने देती। पैरों की बेचैनी इसी तीव्र उत्साह, चंचलता और लगातार सक्रिय रहने की इच्छा का संकेत है।

चरण 2: बिंब का विस्तार गिरकर बच जाने से उनका साहस और बढ़ता है; वे फिर उसी खेल में लग जाते हैं। उनकी गति इतनी तेज और अनुभव इतना उल्लासपूर्ण है कि उन्हें पृथ्वी भी तेजी से अपने पैरों की ओर आती हुई प्रतीत होती है। इस चित्र में बेचैन पैर बालमन की अनियंत्रित उमंग को दृश्य रूप देते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष पैरों को बेचैन इसलिए कहा गया है कि पतंग उड़ाने के उत्साह में बच्चे लगातार दौड़ते-भागते हैं और एक जगह टिक नहीं पाते; उनके मन की चंचलता पैरों की गति में व्यक्त होती है।

त्वरित सुझाव: बेचैन पैरों को चिंता का संकेत न मानें; प्रसंग में वे उत्साह, चंचलता और निरंतर गति के प्रतीक हैं।

8(घ). "पतंगों के सहारे वे भी उड़ रहे हैं" – आशय स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यात्मक कथन का अर्थ बालमन की तन्मयता और कल्पना के आधार पर खुलता है।
- उत्तर के प्रत्येक निष्कर्ष को दिए गए काव्यांश के भाव और शब्दों से जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: पतंग के साथ एकात्मता बच्चे पतंग उड़ाते हुए इतने तल्लीन हो जाते हैं कि उन्हें पतंग की उड़ान अपनी उड़ान जैसी लगती है। उनका शरीर छत पर होता है, किंतु मन आकाश में पतंग के साथ ऊँचा उठता है। वे पतंग की गति, दिशा और ऊँचाई से भावात्मक रूप से जुड़कर उसके साथ एकात्म अनुभव करते हैं।

चरण 2: कल्पना और उल्लास आकाश का खुलापन बच्चों की कल्पना, आकांक्षा और उमंग को विस्तार देता है। पतंग के ऊँचा उठने के साथ उनका उत्साह भी बढ़ता है और वे धरती की सीमाओं को भूलते हुए स्वतंत्रता अनुभव करते हैं। यहाँ बच्चों के सचमुच हवा में उड़ने की बात नहीं है; यह उनकी मानसिक उड़ान और खेल में पूर्ण तन्मयता का सजीव चित्र है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि पतंग उड़ाते समय बच्चे कल्पना और मन से पतंग के साथ आकाश में उड़ते हुए स्वतंत्रता तथा असीम उल्लास का अनुभव करते हैं।

त्वरित सुझाव: वास्तविक उड़ान और कल्पना की उड़ान का भेद स्पष्ट करते हुए बच्चों की तन्मयता को उत्तर का केंद्र बनाइए।

---

9. प्रभु प्रताप सुनि कान
विकल भए वानर निकर
आइ गयउ हनुमान
जिमि करुना महँ वीर रस । [6 अंक]

9(क). भाषा प्रयोग की दो विशेषताएँ लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषिक विशेषता में बोली, शब्दावली तथा अभिव्यक्ति की प्रकृति देखी जाती है।
- काव्यांश में अवधी के रूप और रस के अनुरूप संक्षिप्त, चित्रात्मक भाषा प्रमुख हैं।

चरण 1: अवधी भाषा का सहज प्रयोग इस काव्यांश की भाषा अवधी है। 'सुनि', 'भए', 'आइ गयउ', 'जिमि' और 'महँ' जैसे शब्द इसके स्पष्ट उदाहरण हैं। ये बोलचाल के निकट रूप अभिव्यक्ति को सहज और प्रवाहपूर्ण बनाते हैं। संस्कृतनिष्ठ 'प्रभु', 'प्रताप' तथा 'वीर रस' जैसे शब्दों के साथ लोकप्रचलित रूपों का मेल भाषा को स्वाभाविक बनाता है।

चरण 2: भावानुकूल और चित्रात्मक अभिव्यक्ति भाषा कम शब्दों में पूरा दृश्य सामने लाती है। 'विकल भए वानर निकर' से वानरों की व्याकुलता और 'आइ गयउ हनुमान' से परिस्थिति में आया परिवर्तन उभरता है। करुणा के बीच वीर रस के आने की अभिव्यक्ति हनुमान के आगमन को सजीव बनाती है। इस प्रकार शब्द चयन पात्रों की मन:स्थिति और प्रसंग के भाव दोनों के अनुकूल है।

चरण 3: निष्कर्ष दो प्रमुख भाषिक विशेषताएँ हैं: अवधी की सहज, प्रवाहमयी भाषा और भावानुकूल, चित्रात्मक अभिव्यक्ति।

त्वरित सुझाव: बोली का नाम लिखकर काव्यांश के दो शब्द दें; दूसरी विशेषता को भी किसी पद से प्रमाणित करें।

9(ख). काव्यांश का भाव सौन्दर्य लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-सौंदर्य में प्रसंग की अनुभूति और उसमें आए भाव-परिवर्तन की व्याख्या की जाती है।
- इस अंश में वानरों की व्याकुलता के बीच हनुमान का आगमन आशा और उत्साह जगाता है।

चरण 1: व्याकुलता का सामूहिक चित्र काव्यांश में वानर-समूह की विह्वल अवस्था का चित्र है। 'विकल भए वानर निकर' से स्पष्ट होता है कि संकट का प्रभाव केवल किसी एक पात्र तक सीमित नहीं है; पूरा समूह दु:ख और चिंता से भर उठा है। यह सामूहिक व्याकुलता

वातावरण में करुणा उत्पन्न करती है और पात्रों की आत्मीयता का अनुभव कराती है।

चरण 2: हनुमान के आगमन से आशा का संचार ऐसे करुण वातावरण में हनुमान का आना वीर रस के प्रवेश जैसा दिखाई देता है। 'जिमि करुना महँ वीर रस' में शोक के बीच साहस और आशा के उभरने का सुंदर भाव है। हनुमान की सक्रियता और सामर्थ्य से व्याकुल समूह को सहारा मिलने की संभावना जागती है। करुणा और वीरता का यह मेल प्रसंग को अत्यंत मार्मिक और प्रभावशाली बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष इस अंश का भाव-सौंदर्य सामूहिक व्याकुलता के बीच हनुमान के आगमन से जागते साहस, आशा और उत्साह में है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य बताते समय पहले वातावरण का भाव और फिर हनुमान के आगमन से हुआ परिवर्तन स्पष्ट करें।

9(ग). काव्यांश की अलंकार योजना पर प्रकाश डालिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा में दो भिन्न वस्तुओं की समानता को 'जिमि' जैसे वाचक शब्द से व्यक्त किया जाता है।
- अलंकार की पहचान के साथ उसके घटक और प्रसंग पर उसका प्रभाव स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: उपमा अलंकार की पहचान 'आइ गयउ हनुमान, जिमि करुना महँ वीर रस' में उपमा अलंकार है। शोकाकुल वानरों के बीच हनुमान का आगमन करुण रस में वीर रस के प्रवेश के समान बताया गया है। यहाँ 'जिमि' उपमावाचक शब्द है। हनुमान का आगमन उपमेय तथा करुणा में वीर रस का प्रवेश उपमान है।

चरण 2: समान धर्म और काव्यगत प्रभाव दोनों स्थितियों का समान धर्म उदासी और व्याकुलता के वातावरण में साहस, उत्साह और आशा का संचार करना है। कवि ने भावों के मेल द्वारा हनुमान की प्रभावशाली उपस्थिति को मूर्त कर दिया है। इसलिए यह तुलना केवल सजावट नहीं है; इसके माध्यम से करुण वातावरण और उसे बदलने वाली वीरता एक साथ अनुभव होती हैं। अलंकार प्रसंग की मार्मिकता बढ़ाता है।

चरण 3: निष्कर्ष यहाँ मुख्यत: उपमा अलंकार है; 'जिमि' द्वारा हनुमान के आगमन को करुण रस में वीर रस के प्रवेश के समान बताया गया है।

त्वरित सुझाव: उपमा बताते समय 'जिमि' उद्धृत करें और उपमेय, उपमान तथा समान धर्म का संबंध स्पष्ट लिखें।

अथवा

9. अट्टालिका नहीं है रे, आतंक भवन
सदा पंक पर ही होता, जल विप्लव प्लावन
क्षुद्र प्रफुल्ल जलज से, सदा छलकता नीर
रोक शोक में भी हँसता है, शैशव का सुकुमार शरीर । [6 अंक]

9(क). काव्यांश की दो भाषिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा-शैली की पहचान शब्दों के स्वरूप और अभिव्यक्ति की पद्धति से की जाती है।
- इस अंश में संस्कृतनिष्ठ शब्दावली तथा प्रतीकात्मक, चित्रात्मक अभिव्यक्ति प्रमुख हैं।

चरण 1: संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली काव्यांश की भाषा खड़ी बोली हिंदी है जिसमें तत्सम शब्दों की प्रधानता है। 'अट्टालिका', 'आतंक',

'विप्लव', 'प्लावन', 'क्षुद्र', 'प्रफुल्ल', 'जलज' तथा 'शैशव' इसके उदाहरण हैं। ये शब्द अर्थ को गंभीरता तथा अभिव्यक्ति को प्रभाव देते हैं। 'रे' जैसे संबोधन से कथन में सीधापन और भावावेग भी आता है।

चरण 2: प्रतीकात्मक तथा चित्रात्मक भाषा अट्टालिका संपन्न वर्ग के वैभव की, पंक उपेक्षित जनजीवन की और खिलता जलज उस जीवन की जीवनी-शक्ति की ओर संकेत करता है। छोटे कमल और सुकुमार शिशु के चित्र से प्रतिकूल परिस्थिति में भी प्रसन्न रहने की क्षमता उभरती है। इस प्रकार दृश्य बिंबों द्वारा सामाजिक विचार व्यक्त होता है। भाषा भावों को केवल बताती नहीं, उन्हें पाठक के सामने सजीव भी करती है।

चरण 3: निष्कर्ष दो प्रमुख विशेषताएँ हैं: तत्सम शब्दों से युक्त खड़ी बोली और प्रतीकात्मक, चित्रात्मक अभिव्यक्ति।

त्वरित सुझाव: भाषिक विशेषता को उदाहरण के साथ लिखें: शब्दावली के लिए 'विप्लव' और प्रतीक के लिए 'अट्टालिका' उपयोगी हैं।

9(ख). काव्यांश की अलंकार योजना पर प्रकाश डालिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुप्रास में एक ही वर्ण की आवृत्ति ध्वनि-सौंदर्य उत्पन्न करती है।
- रूपक में उपमेय पर उपमान का सीधा आरोप होता है; कविता में इससे कथ्य तीखा और प्रभावपूर्ण बनता है।

चरण 1: रूपक की योजना 'अट्टालिका नहीं है रे, आतंक भवन' में अट्टालिका को सीधे आतंक का भवन कहा गया है। उसमें रहने वाले संपन्न वर्ग के भय को भवन की पहचान बना दिया गया है। इस सीधे आरोप में रूपक अलंकार है। इससे वैभवशाली इमारत का बाहरी आकर्षण हटकर उसके भीतर छिपे भय का चित्र सामने आता है।

चरण 2: अनुप्रास से ध्वनि-सौंदर्य 'पंक पर' में प वर्ण तथा 'शैशव का सुकुमार शरीर' में 'शैशव' और 'शरीर' के भीतर श वर्ण की आवृत्ति है। इन प्रयोगों में अनुप्रास अलंकार है। वर्णों की यह पुनरावृत्ति काव्यांश को ध्वनि-सौंदर्य, लय और प्रवाह देती है। कमल तथा शिशु के कोमल चित्र इस लय से और प्रभावी बनते हैं। रूपक जहाँ सामाजिक स्थिति के प्रति कवि का दृष्टिकोण तीखा करता है, वहीं अनुप्रास अभिव्यक्ति को श्रवण-सुखद बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष इस अंश में 'आतंक भवन' में रूपक तथा 'पंक पर' और 'शैशव ... शरीर' में अनुप्रास की योजना है।

त्वरित सुझाव: अनुप्रास में समान वर्ण देखें: 'पंक पर' में प तथा 'शैशव ... शरीर' में श की आवृत्ति स्पष्ट है।

9(ग). काव्यांश का भाव सौन्दर्य लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-सौंदर्य समझने के लिए अट्टालिका और पंक में खिलते जलज के विपरीत चित्रों को साथ पढ़ना चाहिए।
- इस अंश में प्रतिकूलता के बीच सामान्य जन की जीवनी-शक्ति और सहज प्रसन्नता का सौंदर्य है।

चरण 1: वैभव के भीतर छिपा भय कवि अट्टालिका को 'आतंक भवन' कहकर संकेत करता है कि बाहरी वैभव के भीतर भय और असुरक्षा छिपे हैं। परिवर्तन का आभास सुविधा-संपन्न वर्ग को व्याकुल करता है। दूसरी ओर पंक और जल-प्लावन का चित्र विपरीत परिस्थितियों का बोध कराता है। दोनों के अंतर से कविता का सामाजिक आशय उभरता है।

चरण 2: विपत्ति के बीच जीवन का उल्लास पंक में छोटा कमल खिलता है और शोकपूर्ण परिस्थिति में भी शिशु का सुकुमार शरीर हँसता है। ये चित्र बताते हैं कि अभाव और कठिनाई जीवन की सहज प्रसन्नता को पूरी तरह नष्ट नहीं कर पाते। उपेक्षित जनजीवन में भी नई आशा तथा विकास की शक्ति बनी रहती है। कवि इसी जीवन-विश्वास और संघर्ष के बीच खिलने वाले सौंदर्य के प्रति सहानुभूति व्यक्त

करता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश का भाव-सौंदर्य वैभव के भय और अभावग्रस्त जीवन की निर्भय, सहज प्रसन्नता के विरोध में निहित है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को अट्टालिका के भय और पंक में खिलते कमल के उल्लास के दो चित्रों पर केंद्रित रखें।

10(क). तुलसीदास के कवित्त के आधार पर तत्कालीन समाज की आर्थिक विषमता पर प्रकाश डालिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास के कवित्त में तत्कालीन समाज की आर्थिक दुर्दशा आजीविका के संकट और भूख के रूप में व्यक्त हुई है।
- किसान, व्यापारी, भिखारी और सेवक के उदाहरण बताते हैं कि संकट समाज के अनेक वर्गों में फैला है।
- पेट की आग का बिंब आर्थिक विवशता की तीव्रता और उसके नैतिक परिणाम स्पष्ट करता है।

चरण 1: आजीविका के साधनों का संकट तुलसीदास कहते हैं कि किसान को खेती का सहारा नहीं मिल रहा, भिखारी को भीख नहीं मिलती, व्यापारी का व्यापार ठप है और सेवक को चाकरी नहीं मिलती। 'खेती न किसान को' जैसे कथन उत्पादन और रोजगार के गहरे संकट को व्यक्त करते हैं। काम करने की इच्छा रखने वाले लोग भी जीविका से वंचित हैं। इससे स्पष्ट है कि समाज की आर्थिक व्यवस्था सामान्य लोगों की मूलभूत आवश्यकताएँ पूरी नहीं कर पा रही थी।

चरण 2: भूख से उत्पन्न असहायता और विषमता निर्धन व्यक्ति के सामने सबसे बड़ा प्रश्न पेट भरना है। लोग जीविका के अभाव में दुःखी होकर एक-दूसरे से पूछते हैं कि कहाँ जाएँ और क्या करें। कवि विभिन्न व्यवसायों में लगे लोगों की विवशता दिखाकर बताता है कि श्रम करने वाले वर्ग का जीवन असुरक्षित था। सामाजिक विषमता का सबसे करुण पक्ष यह है कि सामान्य जन का सारा प्रयास केवल जीवन-निर्वाह में लग जाता है।

चरण 3: आर्थिक संकट का मानवीय और नैतिक प्रभाव पेट की आग मनुष्य से ऊँचे-नीचे कर्म करवाती है और धर्म-अधर्म का विवेक तक संकट में डाल देती है। कवि की यह बात कि लोग पेट के लिए बेटा-बेटी तक बेच देते हैं, निर्धनता की चरम अमानवीय स्थिति सामने रखती है। यहाँ आर्थिक समस्या केवल धन की कमी नहीं, मानवीय गरिमा और सामाजिक संबंधों के विघटन का कारण भी है। कवि इस चित्रण से पीड़ित जन के प्रति गहरी करुणा प्रकट करता है।

चरण 4: निष्कर्ष तुलसीदास ने बेरोजगारी, आजीविका के अभाव, भूख और उससे उत्पन्न अमानवीय विवशताओं के माध्यम से तत्कालीन आर्थिक विषमता और जनसाधारण की दुर्दशा को उजागर किया है।

त्वरित सुझाव: किसान, व्यापारी और सेवक के उदाहरणों के बाद पेट की आग के सामाजिक परिणाम जोड़ें; उत्तर सामान्य गरीबी-वर्णन तक सीमित न रखें।

10(ख). "बात सीधी थी" – कविता का संदेश स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता सहज अभिव्यक्ति और भाषा के स्वाभाविक प्रयोग का महत्त्व बताती है।
- विचार के अनुरूप भाषा चुननी चाहिए; शब्दों का अनावश्यक प्रदर्शन कथ्य को अस्पष्ट कर सकता है।

चरण 1: सरल बात के उलझने का कारण कवि के पास एक सीधी और स्पष्ट बात थी, पर उसे प्रभावशाली बनाने के लिए वह भाषा को बार-बार बदलता और सजाता रहा। शब्दों को अत्यधिक कसने और घुमाने से बात की सहजता नष्ट हो गई। जिस भाषा को विचार तक पहुँचने का माध्यम बनना था, उसी का आकर्षण विचार की अभिव्यक्ति में बाधा बन गया।

चरण 2: कविता का संदेश कविता में बात का शरारती बच्चे की तरह खेलना और भाषा का पेंच खुल जाना यह संकेत देता है कि

अभिव्यक्ति जबरदस्ती से सफल नहीं होती। जैसे पेंच को गलत ढंग से कसने पर उसकी चूड़ियाँ बिगड़ जाती हैं, वैसे ही शब्दों को बेवजह तोड़ने-मरोड़ने से अर्थ का संबंध टूट जाता है। कवि के अनुसार बात को उसकी सहज गति में व्यक्त करना चाहिए। भाषा सरल हो, स्वाभाविक हो और भाव को ठीक-ठीक संप्रेषित करे। अलंकरण तभी उपयोगी है जब वह अर्थ को स्पष्ट और प्रभावी बनाए। कविता रचनाकार को भी सावधान करती है कि केवल भाषा की सजावट पर ध्यान देना पर्याप्त नहीं है। शब्द और अर्थ का संतुलन बना रहने पर ही पाठक तक मूल अनुभूति पहुँचती है।

चरण 3: निष्कर्ष कविता का संदेश है कि भाषा भाव और विचार की सहज अभिव्यक्ति का साधन बने। अनावश्यक शब्दाडंबर और भाषाई कारीगरी के मोह में सीधी बात को उलझाना उचित नहीं है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में सरल कथ्य, भाषा के अनावश्यक कसाव और सहज संप्रेषण का संबंध अवश्य स्पष्ट करें।

10(ग). सबसे तेज बौछारों के साथ भादों के बीत जाने के बाद प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण 'पतंग' कविता के आधार पर अपने शब्दों में कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलोक धन्वा की कविता में भादों के बाद का वातावरण उज्ज्वल, खुला और उत्साहपूर्ण है।
- प्रकृति के रंग, प्रकाश और आकाश का विस्तार पतंग उड़ाने के अनुकूल वातावरण रचते हैं।

चरण 1: वर्षा के बाद का नया वातावरण भादों की तेज बौछारों के बीत जाने पर वर्षा का घना और बाधक वातावरण बदल जाता है। सुबह खरगोश की आँखों जैसी लाल दिखाई देती है। शरद का आगमन अपनी चमकीली साइकिल पर घंटी बजाते हुए आने के रूप में चित्रित है। इस मानवीकरण से ऋतु का आना जीवंत, गतिशील और आनंदपूर्ण बन गया है। सुबह की लालिमा तथा शरद की चमक प्रकृति में ताजगी और उल्लास भर देती है।

चरण 2: खुले आकाश और चमकती दिशाओं का चित्र कवि के चित्रण में तेज चमकने वाली दिशाएँ और साफ, कोमल आकाश दिखाई देते हैं। यह आकाश इतना आत्मीय लगता है कि बच्चे उसे छूने की कल्पना कर सकते हैं। वर्षा के बाद खुला हुआ यह वातावरण पतंगों को ऊँचाई तक उड़ाने का अवसर देता है। हवा, उजाला और आकाश का फैलाव बच्चों के उमंगपूर्ण संसार से जुड़ जाते हैं। इस प्रकार प्राकृतिक दृश्य केवल सुंदर पृष्ठभूमि नहीं रहते, बल्कि बालसुलभ उत्साह और स्वतंत्रता को भी व्यक्त करते हैं। इन बिंबों में रंग और गति साथ-साथ आते हैं, जिससे वर्षा के बाद प्रकृति के निखरे रूप का सजीव अनुभव होता है।

चरण 3: निष्कर्ष भादों के बीतने पर लालिमा भरी सुबह, चमकती शरद, उजली दिशाओं और साफ मुलायम आकाश का मनोहारी दृश्य उभरता है। यह खुलापन पतंग उड़ाने वाले बच्चों के उल्लास को बढ़ाता है।

त्वरित सुझाव: प्राकृतिक चित्रण में सुबह की लालिमा, शरद की चमक और स्वच्छ कोमल आकाश के बिंब जोड़ें।

11. लोभ का यह जीतना नहीं कि जहाँ लोभ होता है, यानी मन में, वहाँ नकार हो ! यह तो लोभ की ही जीत है और आदमी की हार । आँख अपनी फोड़ डाली, तब लोभनीय के दर्शन से बचे तो क्या हुआ ? ऐसे क्या लोभ मिट जाएगा ? और कौन कहता है कि आँख फूटने पर रूप दीखना बन्द हो जाएगा ? क्या आँख बन्द करके ही हम सपने नहीं लेते हैं ? और वे सपने क्या चैन-भंग नहीं करते हैं ? इससे मन को बन्द कर डालने की कोशिश तो अच्छी नहीं । वह अकारथ है यह तो हठवाला योग है । शायद हठ-ही-हठ है, योग नहीं है । इससे मन कृश भले ही हो जाए और पीला और अशक्त; जैसे विद्वान का ज्ञान । वह मुक्त ऐसे नहीं होता । इससे वह व्यापक की जगह संकीर्ण और विराट की जगह क्षुद्र होता है । इसलिए उसका रोम-रोम मूँदकर बन्द तो मन को करना नहीं चाहिए । [8 अंक]

11(क). 'लोभ को नकारना लोभ की ही जीत है' – कैसे ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लोभ का मूल स्थान मन है; बाहरी निषेध से उसका मूल नष्ट नहीं होता।
- गद्यांश दमन और वास्तविक मानसिक मुक्ति के बीच अंतर स्पष्ट करता है।

चरण 1: नकार और लोभ का संबंध लेखक के अनुसार मन में उठने वाले लोभ को केवल दबा देना उस पर विजय प्राप्त करना नहीं है। इच्छा भीतर बनी रहती है और व्यक्ति उससे बचने के लिए अपने ही मन पर रोक लगाता रहता है। वह अपनी स्वतंत्र समझ से नहीं, लोभ के भय से व्यवहार करता है। इसलिए उसका जीवन अब भी उसी आकर्षण से नियंत्रित होता रहता है।

चरण 2: लोभ की जीत कैसे होती है गद्यांश में आँख फोड़ने और आँख बंद करके सपने देखने का उदाहरण है। वस्तु को देखना बंद करने पर भी उसका आकर्षण कल्पना में बना रह सकता है। इसी तरह मन को बंद करने से मनुष्य संकीर्ण और दुर्बल होता है। लोभ नष्ट हुए बिना मनुष्य की शक्ति घटती है, इसलिए लेखक इसे लोभ की जीत और आदमी की हार कहता है।

चरण 3: निष्कर्ष लोभ को केवल नकारने या दबाने से वह मन में बना रहता है और व्यक्ति उसी के भय में अपनी स्वतंत्रता खो देता है। इसी कारण ऐसा नकार लोभ की जीत है।

त्वरित सुझाव: दमन से इच्छा का अंत नहीं होता; इसी अंतर को गद्यांश के आँख और सपने वाले उदाहरण से जोड़ें।

11(ख). आँख फोड़ने का दृष्टांत क्यों दिया गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दृष्टांत किसी विचार को ठोस उदाहरण से स्पष्ट करता है।
- आँख का बाहरी नियंत्रण मन के भीतर के आकर्षण को समाप्त नहीं कर सकता।

चरण 1: दृष्टांत का सीधा अर्थ लेखक ने आँख फोड़ने का दृष्टांत यह समझाने के लिए दिया है कि लोभनीय वस्तुओं को न देखना लोभ से मुक्त होना नहीं है। आँख न रहने पर सामने की वस्तु का दर्शन रुक सकता है, पर मन में बैठी उसकी इच्छा बनी रहती है। अत: बाहरी इंद्रिय को निष्क्रिय कर देने से भीतरी विकार अपने-आप नहीं मिटता।

चरण 2: तर्क की पुष्टि लेखक पूछता है कि क्या आँख बंद करके हम सपने नहीं देखते और क्या वे सपने हमारी शांति भंग नहीं करते। इससे स्पष्ट है कि आकर्षक रूप और इच्छाएँ कल्पना में भी उपस्थित हो सकते हैं। उदाहरण बाहरी त्याग को पर्याप्त मानने की भूल दिखाता है और मन को जबरन बंद करने के निष्फल प्रयास का विरोध करता है।

चरण 3: निष्कर्ष आँख फोड़ने का दृष्टांत बाहरी इंद्रिय-दमन की निरर्थकता दिखाने के लिए दिया गया है। लोभ मन में रहता है और दृश्य न मिलने पर भी सपनों तथा कल्पना में सक्रिय रह सकता है।

त्वरित सुझाव: दृष्टांत का अर्थ केवल अंधेपन तक सीमित न रखें; उसे मन में बचे लोभ और सपनों से जोड़ें।

11(ग). 'शायद हठ ही है, योग नहीं है' – आशय स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में हठ मन का जबरन दमन है और वास्तविक मुक्ति उससे भिन्न है।
- किसी उपाय का मूल्य उसके परिणाम से समझना चाहिए: विस्तार और स्वतंत्रता या संकीर्णता और दुर्बलता।

चरण 1: हठ का आशय लेखक मन को जबरन बंद करके लोभ से बचने की कोशिश को हठ कहता है। मन की इच्छाओं को समझने और उनसे मुक्त होने के स्थान पर व्यक्ति उन पर बलपूर्वक रोक लगाता है। यह बाहरी कठोरता है; इससे भीतर का आकर्षण समाप्त नहीं होता। इसी कारण लेखक ऐसी कोशिश को अकारथ बताता है।

चरण 2: योग क्यों नहीं गद्यांश के अनुसार इस दमन से मन कृश, पीला और अशक्त हो सकता है, किंतु मुक्त नहीं होता। उसका क्षेत्र व्यापक होने के बदले संकीर्ण और उसका रूप विराट होने के बदले क्षुद्र हो जाता है। जो साधना मन की स्वतंत्रता और व्यापकता बढ़ाने के स्थान पर उसे सिकोड़ दे, वह वास्तविक योग की सार्थकता पूरी नहीं करती। इसलिए लेखक उसमें केवल हठ देखता है।

चरण 3: निष्कर्ष मन को बलपूर्वक दबाना केवल हठ है, क्योंकि उससे लोभ मिटता नहीं और मन दुर्बल तथा संकीर्ण हो जाता है। वास्तविक मुक्ति न देने के कारण लेखक इसे योग नहीं मानता।

त्वरित सुझाव: हठ और योग का अंतर बताते समय मन की दुर्बलता तथा व्यापकता के ह्रास का उल्लेख करें।

11(घ). मुक्त होने के लिए लेखक के अनुसार आवश्यक शर्त क्या है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुक्ति का संबंध मन की भीतरी स्थिति से है, इंद्रियों को बंद करने से नहीं।
- लेखक मन की व्यापकता का समर्थन और संकीर्ण दमन का विरोध करता है।

चरण 1: मन को बंद न करना लेखक के अनुसार मुक्त होने के लिए मन को जबरन बंद नहीं करना चाहिए। लोभ से डरकर उसकी प्रत्येक अनुभूति पर रोक लगा देना केवल दमन है। इससे इच्छा भीतर रह जाती है और मनुष्य अशक्त होता है। आँख बंद होने पर भी सपनों का बने रहना बताता है कि बाहरी अवरोध मन के आकर्षण का समाधान नहीं है।

चरण 2: व्यापक और स्वतंत्र मन की आवश्यकता गद्यांश में मन के व्यापक के स्थान पर संकीर्ण और विराट के स्थान पर क्षुद्र होने को हानिकारक बताया गया है। अत: मुक्ति की आवश्यक शर्त मन को संकुचित करने के बजाय खुला और व्यापक रखना है। वस्तुओं के प्रति आकर्षण से बचने के लिए मन की शक्ति नष्ट नहीं करनी चाहिए। उसे ऐसा स्वतंत्र विवेक चाहिए जिससे इच्छा का दास बने बिना जीवन का सामना कर सके।

चरण 3: निष्कर्ष मुक्त होने की आवश्यक शर्त मन को बलपूर्वक बंद न करना और उसकी व्यापकता बनाए रखना है। लोभ का केवल दमन करने से वास्तविक मानसिक स्वतंत्रता नहीं मिलती।

त्वरित सुझाव: उत्तर का आधार अंतिम पंक्ति बनाएँ: मन को बंद न करना, संकीर्णता से बचना और व्यापक बने रहना।

अथवा

11. प्लेटफार्म पर उसके बहुत से दोस्त, भाई, रिश्तेदार थे, हसरत भरी नज़रों, बहते हुए आँसुओं, ठंडी साँसों और भिंचे हुए होठों को बीच में से काटती हुई रेल सरहद की तरफ बढ़ी । अटारी में पाकिस्तानी पुलिस उतरी, हिन्दुस्तानी पुलिस सवार हुई । कुछ समझ में नहीं आता था कि कहाँ से लाहौर खत्म हुआ और किस जगह से अमृतसर शुरू हो गया । एक ज़मीन थी, एक ज़बान थी, एक-सी सूरतें और लिबास, एक-सा लबो लहज़ा, और अंदाज़ थे, गालियाँ भी एक ही सी थीं जिनसे दोनों बड़े प्यार से एक दूसरे को नवाज़ रहे थे । बस मुश्किल सिर्फ़ इतनी थी कि भरी हुई बन्दूकें दोनों के हाथों में थीं । [8 अंक]

11(क). क्यों पता नहीं लगता कि कहाँ लाहौर खत्म हुआ और कहाँ अमृतसर शुरू हुआ ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग में दोनों ओर के लोगों की सांस्कृतिक समानता दिखाई गई है।
- राजनीतिक सीमा और मनुष्य के रहन-सहन के बीच अंतर समझना आवश्यक है।

चरण 1: समानताओं को पहचानना गद्यांश में दोनों ओर एक जैसी ज़मीन, एक भाषा, समान सूरतें और पहनावा बताया गया है। लोगों के बोलने का लहजा, व्यवहार और बातचीत का अंदाज़ भी एक जैसा है। वे प्रेमपूर्वक एक-दूसरे को जिस प्रकार की गालियाँ दे रहे थे, उसमें भी कोई भेद नहीं था। इसलिए बाहरी जीवन में ऐसा स्पष्ट परिवर्तन नहीं आता जिससे सीमा का पता चले।

चरण 2: सीमा का आशय समझना लाहौर और अमृतसर अलग देशों में होने पर भी एक साझा सांस्कृतिक परिवेश के भाग हैं। विभाजन ने राजनीतिक सीमा तो खींच दी, पर उससे लोगों की भाषा और जीवन-पद्धति अचानक नहीं बदल गई। इसी कारण यात्रा में यह पहचानना कठिन था कि लाहौर कहाँ समाप्त हुआ और अमृतसर कहाँ आरंभ हो गया।

चरण 3: निष्कर्ष दोनों स्थानों की ज़मीन, भाषा, वेशभूषा, सूरत और व्यवहार समान थे। साझा संस्कृति के कारण लाहौर और अमृतसर के बीच राजनीतिक विभाजन की कोई स्पष्ट सांस्कृतिक सीमा दिखाई नहीं देती थी।

त्वरित सुझाव: उत्तर में गद्यांश की ठोस समानताएँ गिनाकर उन्हें राजनीतिक सीमा से जोड़िए।

11(ख). प्लेटफार्म पर खड़े लोगों की दशा कैसी थी, और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पात्रों की मनोदशा उनके हावभाव और शारीरिक प्रतिक्रियाओं से पहचानी जाती है।
- इस प्रसंग में विदाई के दुःख और आत्मीय लगाव को साथ समझना चाहिए।

चरण 1: दशा के संकेत चुनना प्लेटफार्म पर खड़े दोस्त, भाई और रिश्तेदार बहुत दुखी तथा भावुक थे। उनकी आँखों में हसरत थी, आँसू बह रहे थे, वे ठंडी साँसें भर रहे थे और उनके होंठ भिंचे हुए थे। ये संकेत उनकी व्यथा और अपने भावों को सँभालने के प्रयास को व्यक्त करते हैं। उनका दुःख केवल सामान्य उदासी नहीं, बल्कि अपने प्रिय व्यक्ति से अलग होने की पीड़ा है।

चरण 2: दुःख का कारण बताना सफ़िया को विदा करते हुए वे उससे बिछुड़ रहे थे। रेल उसे सरहद की ओर ले जा रही थी, इसलिए उनके बीच की दूरी का अनुभव और तीव्र हो रहा था। उनके मन में आत्मीयता थी और वे उसे अपने पास रखना चाहते थे; किंतु विदाई के समय इस इच्छा को पूरा नहीं कर सकते थे। इसी विवशता से उनकी नज़रें हसरत भरी थीं।

चरण 3: निष्कर्ष प्लेटफार्म पर लोग आँसू बहाते, ठंडी साँसें भरते और होंठ भींचे अत्यंत दुखी खड़े थे। वे सफ़िया से बिछुड़ने तथा उसके सरहद के पार चले जाने की पीड़ा अनुभव कर रहे थे।

त्वरित सुझाव: दशा के लिए आँसू, साँसें और होंठ जैसे संकेत दें; कारण में आत्मीय व्यक्ति से बिछुड़ना लिखें।

11(ग). पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की पुलिस कहाँ बदली और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में स्थान और घटना का सीधा प्रमाण लेकर उत्तर देना चाहिए।
- देश की सीमा बदलने पर सुरक्षा का प्रशासनिक दायित्व भी बदलता है।

चरण 1: स्थान और घटना स्पष्ट करना पाकिस्तानी और हिंदुस्तानी पुलिस की अदला-बदली अटारी में हुई। गद्यांश में स्पष्ट लिखा है कि वहाँ पाकिस्तानी पुलिस रेल से उतर गई और हिंदुस्तानी पुलिस उसमें सवार हो गई। इसलिए उत्तर में स्थान अटारी ही देना चाहिए; केवल लाहौर अथवा अमृतसर कहना कथन के प्रत्यक्ष प्रमाण के अनुरूप नहीं होगा।

चरण 2: परिवर्तन का कारण समझना रेल पाकिस्तान से हिंदुस्तान की सीमा में प्रवेश कर रही थी। पाकिस्तान की ओर सुरक्षा सँभालने वाली पुलिस का दायित्व समाप्त हुआ और भारत की ओर सुरक्षा का दायित्व हिंदुस्तानी पुलिस ने सँभाला। इस प्रकार पुलिस का बदलना दोनों देशों की अलग प्रशासनिक तथा सुरक्षा व्यवस्थाओं का संकेत है। लोगों में सांस्कृतिक समानता होने पर भी राजनीतिक सीमा मौजूद थी।

चरण 3: निष्कर्ष अटारी में पाकिस्तानी पुलिस उतरी और हिंदुस्तानी पुलिस सवार हुई। रेल के हिंदुस्तान की सीमा में प्रवेश करने के कारण सुरक्षा और निगरानी का दायित्व भारतीय पुलिस को सौंपा गया।

त्वरित सुझाव: पहले अटारी और पुलिस के उतरने-चढ़ने की घटना लिखें, फिर सीमा बदलने का कारण स्पष्ट करें।

11(घ). आशय स्पष्ट कीजिए – 'मुश्किल सिर्फ इतनी थी कि भरी हुई बंदूकें दोनों के हाथों में थीं ।' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यंग्यात्मक कथन में प्रत्यक्ष अर्थ के पीछे छिपे सामाजिक विरोधाभास को समझना चाहिए।
- साझी संस्कृति के साथ सशस्त्र अविश्वास का होना इस अंश की केंद्रीय विडंबना है।

चरण 1: साझेपन की पृष्ठभूमि समझना गद्यांश में भाषा, ज़मीन, वेशभूषा, सूरत और व्यवहार की समानता बताई गई है। दोनों ओर के लोग बातचीत में आत्मीय हैं। इन समानताओं के कारण उनके बीच स्वाभाविक दूरी दिखाई नहीं देती। इस पृष्ठभूमि में दोनों पक्षों के हाथों में भरी बंदूकें होना विशेष रूप से चुभता है।

चरण 2: बंदूकों का निहितार्थ खोलना भरी बंदूकें केवल हथियार नहीं, बल्कि राजनीतिक विभाजन से उत्पन्न तनाव, संदेह और शत्रुता की प्रतीक हैं। लेखक का संकेत है कि इतने समान मनुष्यों को सीमा और सुरक्षा की व्यवस्था आमने-सामने खड़ा कर देती है। वे एक-दूसरे से प्यार से बोल सकते हैं, फिर भी हथियार उन्हें संभावित शत्रु की स्थिति में रखते हैं। यही विभाजन की दुखद विडंबना और असली मुश्किल है।

चरण 3: निष्कर्ष इस कथन का आशय है कि दोनों देशों के लोगों में गहरा सांस्कृतिक अपनापन था, किंतु विभाजन से उपजे अविश्वास और राजनीतिक शत्रुता ने उनके हाथों में बंदूकें दे दी थीं। हथियार मानवीय आत्मीयता के सामने बाधा बन गए थे।

त्वरित सुझाव: बंदूकों का केवल शाब्दिक अर्थ न दें; साझा संस्कृति के बीच राजनीतिक अविश्वास का विरोधाभास स्पष्ट करें।

12(क). महादेवी वर्मा और भक्तिन के संबंधों की तीन विशिष्टताओं का उल्लेख कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महादेवी वर्मा और भक्तिन का संबंध सेविका तथा स्वामिनी की औपचारिक सीमा से आगे जाता है।
- तीन विशिष्टताएँ अलग-अलग समझाकर प्रत्येक को पाठ के व्यवहार से प्रमाणित करना चाहिए।

चरण 1: सेवा से आगे का आत्मीय संबंध महादेवी वर्मा और भक्तिन के बीच ऐसा अपनापन था कि उनका संबंध साधारण स्वामी-सेवक संबंध की सीमा में नहीं बाँधा जा सकता। भक्तिन ने लेखिका के दैनिक जीवन और भोजन की जिम्मेदारी अपनी समझ के अनुसार सँभाली। लेखिका भी उसे केवल मजदूरी पर काम करने वाली स्त्री नहीं मानतीं; उसकी जीवनकथा, सुख-दुःख और स्वभाव को सहानुभूति से देखती हैं। यह पारिवारिक आत्मीयता पहली विशेषता है।

चरण 2: स्वतंत्र व्यक्तित्व और परस्पर प्रभाव भक्तिन का अपना दृढ़ व्यक्तित्व था। वह लेखिका की हर बात बिना प्रश्न किए स्वीकार करने वाली सेविका नहीं थी; भोजन और दिनचर्या में अपनी पसंद तथा मान्यताओं का प्रभाव डालती थी। महादेवी उसके हठ और सीमाओं को पहचानते हुए भी उसे स्नेहपूर्वक स्वीकार करती थीं। इस संबंध में भक्तिन की स्वतंत्रता बनी रहती है और दोनों एक-दूसरे के जीवन को प्रभावित करती हैं।

चरण 3: अटूट निष्ठा और सुख-दुःख में साथ भक्तिन की निष्ठा केवल सुविधा के समय तक सीमित नहीं थी। वह लेखिका के कठिन समय में भी साथ रहने को तैयार थी और उनके कारावास की संभावना पर भी उनसे अलग रहने की कल्पना नहीं कर पाती थी। उसके व्यवहार में अपने स्वार्थ से बढ़कर लेखिका की चिंता दिखाई देती है। दूसरी ओर लेखिका उसकी भावनाओं और समर्पण का सम्मान करती थीं। यही विश्वास उनके संबंध को स्थायित्व देता है।

चरण 4: निष्कर्ष उनके संबंध की तीन विशिष्टताएँ हैं: परिवार जैसा आत्मीय अपनापन, भक्तिन के स्वतंत्र व्यक्तित्व की स्वीकृति और परस्पर प्रभाव, तथा कठिन परिस्थितियों में भी साथ निभाने वाली अटूट निष्ठा।

त्वरित सुझाव: तीन विशिष्टताएँ अलग रखें और हर एक के साथ भक्तिन के व्यवहार का एक ठोस संकेत जोड़ें।

12(ख). 'बाज़ार दर्शन' के आधार पर 'बाज़ार का जादू चढ़ने और उतरने' का आशय स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार का जादू वस्तुओं की चमक और आकर्षण से पैदा होने वाली खरीद की लालसा है।
- पाठ आवश्यकताओं की पहचान और मन की सजगता के आधार पर उपभोग का विवेक सिखाता है।

चरण 1: जादू चढ़ने का अर्थ बाज़ार की सजावट और सुंदर वस्तुएँ मनुष्य की आँखों को आकर्षित करती हैं। जब उसके मन में अपनी वास्तविक जरूरत का स्पष्ट बोध नहीं होता और खरीदने की सामर्थ्य होती है, तो उसे अनेक वस्तुएँ जरूरी लगने लगती हैं। वह अपनी आवश्यकता के स्थान पर उनके रूप और आकर्षण से संचालित होने लगता है। यही बाज़ार का जादू चढ़ना है। इस अवस्था में अभाव का अनुभव बढ़ता है और व्यक्ति आवश्यकता से अधिक सामान खरीद लेता है।

चरण 2: जादू उतरने का अर्थ खरीदने का आवेग शांत होने पर व्यक्ति वस्तुओं की उपयोगिता पर विचार करता है। तब उसे पता चलता है कि बहुत-सी चीजें अनावश्यक थीं और उनसे मिलने वाला आनंद क्षणिक था। सामान के कारण सुविधा बढ़ने के बजाय स्थान, धन और रखरखाव का बोझ बढ़ सकता है। आकर्षण हटने पर इस निरर्थक खरीद का बोध और पछतावा होना बाज़ार का जादू उतरना है।

चरण 3: पाठ का विवेकपूर्ण संकेत लेखक का आशय यह है कि बाज़ार का उपयोग अपनी जरूरत पूरी करने के लिए किया जाए। व्यक्ति पहले निश्चित करे कि उसे क्या चाहिए; तभी वस्तुओं की चमक उसे बहकाने में कम सफल होगी। मन खाली रखकर केवल देखने और ललचाने जाने पर बाज़ार का प्रभाव अधिक पड़ता है। वास्तविक आवश्यकता से जुड़ा सजग मन आकर्षक वस्तु और उपयोगी वस्तु में भेद कर सकता है।

चरण 4: निष्कर्ष जादू चढ़ना बाज़ार की चमक से मोहित होकर अनावश्यक वस्तुओं को भी जरूरी मान लेना है। जादू उतरना आकर्षण

शांत होने पर उनकी अनुपयोगिता और व्यर्थ खर्च का बोध होना है। लेखक जरूरत पहचानकर संयमित खरीद का संदेश देता है।

त्वरित सुझाव: चढ़ने में आकर्षण और खरीद की लालसा; उतरने में अनुपयोगिता का बोध और पछतावा दिखाइए।

12(ग). 'काले मेघा पानी दे' पाठ में 'गगरी फूटी बैल पियासा' कथन के पीछे छिपी वेदना को स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह कथन पानी की उपलब्धता और उसके न्यायपूर्ण वितरण के बीच के विरोध को व्यक्त करता है।
- लोकजीवन के प्रतीकों में बैल श्रम करने वाले किसान का और फूटी गगरी व्यर्थ होते संसाधनों का बोध कराती है।

चरण 1: कथन का संदर्भ काले मेघा पानी दे में पानी की कमी से पीड़ित ग्रामीण जीवन की चिंता है। खेती वर्षा पर निर्भर है और वर्षा न होने पर मनुष्य तथा पशु सभी कष्ट पाते हैं। इसी पृष्ठभूमि में गगरी फूटने और बैल के प्यासे रहने का कथन एक गहरी सामाजिक विडंबना को सामने लाता है।

चरण 2: छिपी हुई वेदना देश में योजनाओं और विकास पर बहुत धन खर्च होने के बाद भी उसका पूरा लाभ जरूरतमंद किसानों तक नहीं पहुँचता। जैसे गगरी फूट जाने पर उसका पानी बह जाता है और पास खड़ा बैल प्यासा रह जाता है, वैसे ही संसाधन बीच में नष्ट या हड़प हो जाते हैं। उत्पादन का आधार किसान अपनी बुनियादी जरूरत के लिए भी अभाव झेलता है। यह स्थिति केवल प्राकृतिक संकट की नहीं, व्यवस्था की विफलता की भी पीड़ा व्यक्त करती है।

चरण 3: व्यापक आशय लेखक की वेदना यह है कि जिन लोगों के श्रम से समाज का पालन होता है, उन्हीं तक विकास का जल नहीं पहुँचता। योजनाओं के बड़े दावों और धरातल पर बनी प्यास के बीच का अंतर इस लोककथन को मार्मिक बनाता है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन में संसाधनों की बरबादी, विकास के लाभों के असमान वितरण और किसान की बनी हुई विवशता की वेदना छिपी है।

त्वरित सुझाव: कथन का अर्थ लिखते समय फूटी गगरी को संसाधनों की क्षति और प्यासे बैल को वंचित किसान से जोड़िए।

12(घ). यह क्यों कहा गया है कि 'चार्ली चैपलिन पर अभी 50 वर्षों तक काफ़ी कुछ कहा जाएगा' ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चार्ली की कला साधारण मनुष्य की पीड़ा को हँसी के माध्यम से व्यक्त करती है।
- महान कलाकार की रचनाएँ समय के साथ नए अर्थ देती हैं और उन पर विचार समाप्त नहीं होता।

चरण 1: लोकप्रियता और मानवीय आधार चार्ली चैप्लिन ने अपने अभिनय में निर्धन, असहाय और साधारण मनुष्य के संघर्ष को जगह दी। उनका परिचित चरित्र अपमान, भूख और कठिनाइयों से जूझते हुए भी जीवन से हार नहीं मानता। इसलिए अलग-अलग देशों और पीढ़ियों के दर्शक उसके दुख और हास्य में अपना जीवन पहचान सकते हैं।

चरण 2: कला की जटिलता चार्ली केवल हँसाने वाले अभिनेता नहीं हैं। उनके हास्य के भीतर करुणा और सामाजिक विषमता की पहचान भी है। दर्शक हँसते हुए अपनी ही कमजोरियों और परिस्थितियों को देखते हैं। उनकी अभिनय-शैली तथा हास्य और करुणा के अनोखे मेल में ऐसे अनेक पक्ष हैं जिनकी बार-बार व्याख्या की जा सकती है।

चरण 3: भविष्य में चर्चा का कारण उनकी जन्मशती पर भी उनकी फिल्मों और व्यक्तित्व के विषय में बहुत कुछ लिखा और कहा जा रहा था। फिर भी उनकी कला का मूल्यांकन समाप्त नहीं हुआ था। जीवन की जिन समस्याओं को उन्होंने चित्रित किया, वे आगे भी बनी रहने वाली हैं। इसीलिए लेखक को विश्वास है कि आने वाले लंबे समय तक उन पर सार्थक चर्चा होती रहेगी। उनकी मूक फिल्मों की

दृश्य-भाषा शब्दों और भाषाओं की सीमाएँ भी पार कर जाती है।

चरण 4: निष्कर्ष यह कथन चार्ली की लोकप्रियता, उनकी कला की गहराई और उसके अक्षय मानवीय अर्थों को रेखांकित करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल लोकप्रियता न लिखें; हास्य-करुणा का मेल और साधारण मनुष्य की सार्वकालिक पीड़ा भी स्पष्ट करें।

12(ङ). नमक की पुड़िया ले जाने – न ले जाने के बारे में सफ़िया के मन का द्वन्द्व स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नमक की पुड़िया एक आत्मीय वचन और जन्मभूमि की स्मृति का प्रतीक है।
- सफ़िया के मन में कानून का भय और संबंध निभाने का आग्रह टकराते हैं।

चरण 1: वचन और भावनात्मक आग्रह सिख बीबी ने सफ़िया से लाहौरी नमक लाने को कहा था। उनके लिए वह नमक किसी सामान्य वस्तु का स्वाद भर नहीं था; उससे लाहौर और अपने छूटे हुए वतन की स्मृतियाँ जुड़ी थीं। सफ़िया उनकी भावना समझती थी और दिया हुआ वचन पूरा करना चाहती थी।

चरण 2: नियम का भय सफ़िया को अपने भाई से मालूम हुआ कि पाकिस्तान से भारत नमक ले जाना कानून के विरुद्ध है। अब उसे चिंता हुई कि सीमा पर नमक पकड़ा जाएगा और नियम तोड़ने की स्थिति उत्पन्न होगी। इस कारण उसके मन में नमक साथ ले जाने या छोड़ देने का द्वन्द्व पैदा हुआ। एक ओर राजकीय सीमा और कानून था, दूसरी ओर उस स्त्री की आत्मीय अपेक्षा थी।

चरण 3: द्वन्द्व का समाधान अंततः सफ़िया ने मानवीय संबंध और अपना वचन निभाने को महत्व दिया। उसने नमक ले जाने का निश्चय किया। सीमा-प्रसंग में वह अपनी बात अधिकारियों के सामने भी रखती है; नमक से जुड़ी भावना उन्हें भी प्रभावित करती है। इस प्रकार छोटी-सी पुड़िया विभाजन के बावजूद जीवित आत्मीयता और साझा स्मृतियों का प्रतीक बन जाती है।

चरण 4: निष्कर्ष सफ़िया का द्वन्द्व निषिद्ध वस्तु ले जाने की चिंता और सिख बीबी के प्रति स्नेहपूर्ण वचन निभाने के बीच था; अंत में आत्मीयता की भावना प्रबल हुई।

त्वरित सुझाव: द्वन्द्व के दोनों पक्ष अलग लिखिए: सीमा का कानून और सिख बीबी की स्मृतियों से जुड़ा अपना वचन।

13. 'सिल्वर वैडिंग' के आधार पर उन जीवन मूल्यों पर विचार कीजिए, जो यशोधर बाबू को किशनदा से उत्तराधिकार में मिले थे । आप उनमें से किन्हें अपनाना चाहेंगे ? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यशोधर बाबू के व्यक्तित्व पर किशनदा के सादे, अनुशासित और परोपकारी जीवन का गहरा प्रभाव है।
- जीवन-मूल्यों को अपनाने का अर्थ उनके मानवीय सार को समझना और समय के अनुरूप व्यवहार करना है।

चरण 1: सादगी और आत्मानुशासन सिल्वर वैडिंग में किशनदा यशोधर बाबू के जीवन के आदर्श हैं। उन्होंने किशनदा के निकट रहकर सादा जीवन, नियमित दिनचर्या, परिश्रम और अपनी आवश्यकताओं को सीमित रखने की सीख पाई। इसीलिए यशोधर बाबू दिखावे तथा उपभोक्तावादी जीवन से सहज नहीं हो पाते। वे साधनों की अधिकता को ही जीवन की सफलता नहीं मानते। उनके व्यवहार में किशनदा से मिला मितव्ययिता और अनुशासन का संस्कार दिखाई देता है।

चरण 2: परोपकार और अपनत्व किशनदा ने अपने क्षेत्र से आए युवकों की सहायता की और उन्हें अपने पैरों पर खड़े होने में सहयोग दिया। यशोधर बाबू भी उनकी इसी आत्मीयता से लाभान्वित हुए थे। यह सहयोग स्वार्थ या लाभ के लिए नहीं था। इससे यशोधर बाबू ने सीखा कि व्यक्ति का संबंध केवल अपने परिवार और निजी उन्नति तक सीमित नहीं होना चाहिए। परिचितों, जरूरतमंदों और समाज के

प्रति उत्तरदायित्व भी जीवन का महत्वपूर्ण पक्ष है।

चरण 3: ईमानदारी और नैतिक निष्ठा किशनदा की जीवन-शैली से यशोधर बाबू को ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और सिद्धांतों पर टिके रहने का संस्कार मिला। वे जीवन का मूल्यांकन केवल धन, पद और सुविधाओं के आधार पर नहीं करते। पुराने संबंधों की गरिमा तथा आत्मसम्मान उनके लिए महत्व रखते हैं। किंतु बदलते पारिवारिक वातावरण में यही पुराने संस्कार कभी-कभी उन्हें नई पीढ़ी से असहमत और अकेला भी कर देते हैं। पाठ इस पीढ़ीगत अंतर को संवेदनशील ढंग से सामने रखता है।

चरण 4: मेरी पसंद और उसका कारण मैं किशनदा की ईमानदारी, सादगी, समय के सदुपयोग और निःस्वार्थ सहायता की भावना अपनाना चाहूँगा। ईमानदारी विश्वास पैदा करती है, सादगी अनावश्यक प्रदर्शन से बचाती है और सहायता की भावना समाज में अपनापन बढ़ाती है। साथ ही मैं नई पीढ़ी की उचित जरूरतों तथा विचारों को समझने का प्रयास करूँगा। मूल्यों के प्रति निष्ठा के साथ संवाद और परिवर्तन के प्रति उदारता रखने से परिवार में निकटता बनी रह सकती है।

चरण 5: निष्कर्ष किशनदा ने यशोधर बाबू को सादगी, अनुशासन, ईमानदारी, सामाजिक उत्तरदायित्व और परोपकार की विरासत दी। मैं इनके मानवीय सार को अपनाते हुए समयानुकूल दृष्टि और पारिवारिक संवाद बनाए रखना चाहूँगा।

त्वरित सुझाव: पहले किशनदा से मिले मूल्यों को पाठ के प्रसंग से जोड़ें, फिर अपनी पसंद और उसे अपनाने का कारण स्पष्ट करें।

14(क). मुअनजो दड़ो की सभ्यता पूर्ण विकसित मानव सभ्यता थी, कैसे ? पाठ के आधार पर उदाहरण देकर पुष्ट कीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी सभ्यता का विकास उसके नगर-नियोजन, सार्वजनिक सुविधाओं, आर्थिक जीवन और कलात्मक संवेदना से पहचाना जाता है।
- ओम थानवी के पाठ 'अतीत में दबे पाँव' में मुअनजो दड़ो के अवशेष एक सुव्यवस्थित, सौंदर्यबोध-संपन्न और नागरिक सुविधाओं का ध्यान रखने वाले समाज का प्रमाण हैं।

चरण 1: नगर-नियोजन और स्वच्छता के प्रमाण मुअनजो दड़ो की सड़कें और गलियाँ योजनाबद्ध ढंग से बनी थीं। घरों के निर्माण में पकी ईंटों का प्रयोग हुआ था। घरों में स्नानघर और जल की व्यवस्था थी तथा गंदे पानी की निकासी के लिए नालियाँ बनाई गई थीं। ढकी हुई नालियाँ और उन्हें साफ करने की व्यवस्था बताती है कि नगरवासियों के लिए स्वास्थ्य तथा स्वच्छता महत्त्वपूर्ण थे। ऐसी व्यवस्था किसी अनियोजित बस्ती में नहीं, विकसित नागरिक जीवन में ही संभव है।

चरण 2: सामुदायिक जीवन और आर्थिक संगठन विशाल स्नानागार का निर्माण, उसमें जल भरने तथा निकालने की व्यवस्था और आसपास की संरचनाएँ उन्नत निर्माण-कौशल के प्रमाण हैं। कुएँ और सार्वजनिक भवन नागरिकों की सामूहिक आवश्यकताओं के प्रति सजगता दिखाते हैं। खेती, अनाज के संग्रह, विभिन्न शिल्पों तथा व्यापार से संबंधित अवशेष आर्थिक जीवन की विविधता प्रकट करते हैं। मानकीकृत बाट और मुहरें लेन-देन की सुव्यवस्थित पद्धति की ओर संकेत करती हैं। इससे श्रम-विभाजन तथा सामाजिक संगठन का पता चलता है।

चरण 3: कला, सौंदर्यबोध और सभ्यता का स्वरूप नर्तकी की कांस्य प्रतिमा, पत्थर की मूर्तियाँ, मुहरों पर उकेरी आकृतियाँ, मिट्टी के बर्तन, खिलौने और आभूषण उनके कलाप्रेम तथा कुशल कारीगरी को प्रकट करते हैं। दैनिक उपयोग की वस्तुओं में भी सौंदर्य के प्रति रुचि दिखाई देती है। पाठ में इस सभ्यता की विशेषता उसका भव्य राजसत्ता-प्रदर्शन नहीं, बल्कि सुव्यवस्थित नागरिक जीवन है। विशाल राजमहलों और सत्ता के आतंक की अपेक्षा सामान्य जीवन की सुविधाओं तथा कलात्मकता के प्रमाण अधिक मुखर हैं। इस प्रकार तकनीकी दक्षता, आर्थिक सक्रियता और सांस्कृतिक परिपक्वता एक साथ दिखाई देती हैं।

चरण 4: निष्कर्ष मुअनजो दड़ो की योजनाबद्ध बसावट, सफाई और जल-व्यवस्था, सामुदायिक निर्माण, व्यापार तथा विकसित कलाएँ सिद्ध करती हैं कि वह पूर्ण विकसित मानव सभ्यता थी। उसके अवशेष केवल प्राचीन इमारतें नहीं, नागरिक समझ और संवेदनशील जीवन-दृष्टि के प्रमाण हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में नगर-योजना, स्वच्छता, आर्थिक जीवन और कला के ठोस उदाहरण देकर हर उदाहरण को सभ्यता के विकास से जोड़ें।

14(ख). ऐन फ्रैंक की डायरी में ऐसी क्या विशेषताएँ हैं कि वह पिछले 50 वर्षों में विश्व में सबसे अधिक पढ़ी गई पुस्तकों में एक है ? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन फ्रैंक की डायरी नाजी उत्पीड़न और द्वितीय विश्वयुद्ध की भयावहता को छिपकर रहने वाली एक यहूदी किशोरी के अनुभवों के माध्यम से सामने लाती है।
- इसकी लोकप्रियता का आधार ऐतिहासिक साक्ष्य के साथ आत्मीय अभिव्यक्ति, किशोर मन का सच्चा चित्रण और मनुष्यता में विश्वास है।

चरण 1: इतिहास का जीवंत और मानवीय दस्तावेज ऐन की डायरी युद्ध और यहूदियों पर हुए अत्याचारों का ऐसा विवरण देती है जिसमें बड़ी ऐतिहासिक घटनाओं का सामान्य मनुष्यों के जीवन पर प्रभाव दिखाई देता है। छिपे हुए परिवारों की असुरक्षा, पकड़े जाने का डर, अभाव और बाहरी दुनिया से कट जाने की पीड़ा पाठक अनुभव करता है। इससे युद्ध केवल तिथियों और घटनाओं का विषय नहीं रहता; निर्दोष लोगों का संघर्ष बन जाता है। लेखिका ने जो देखा और भोगा, उसे आत्मीय ढंग से लिखा है, इसलिए उसका विवरण विश्वसनीय और मार्मिक बनता है।

चरण 2: किशोर मन की निष्कपट अभिव्यक्ति डायरी में ऐन की इच्छाएँ, अकेलापन, पारिवारिक संबंधों की उलझनें, प्रेम की आकांक्षा तथा अपने व्यक्तित्व को समझने की कोशिश भी दर्ज हैं। वह बड़ों के व्यवहार पर प्रश्न उठाती है और अपने मन के विरोधाभास भी छिपाती नहीं। पीटर के साथ आत्मीयता तथा प्रकृति और खुले आकाश के प्रति उसकी चाह जीवन की सहज इच्छाओं को सामने लाती है। ऐसी भावनाओं से अलग-अलग देशों और पीढ़ियों के पाठक अपना संबंध बना पाते हैं। पाठक उसे केवल युद्ध की पीड़िता नहीं, सपनों और संवेदनाओं से भरी किशोरी के रूप में पहचानता है।

चरण 3: सहज शैली और सार्वभौमिक मानवीय मूल्य डायरी को मित्र की तरह संबोधित करने से उसमें संवाद की आत्मीयता आती है। भाषा और वर्णन में सहजता है; भयावह परिस्थिति के बीच छोटी खुशियाँ, हँसी और आशा भी दिखाई देती हैं। ऐन अपने विचारों, स्त्रियों की स्थिति और भविष्य के सपनों पर स्वतंत्र रूप से सोचती है। विपरीत परिस्थितियों में भी जीने की इच्छा और मनुष्यता के प्रति आस्था इस रचना को गहरी शक्ति देती है। यह जातीय घृणा और हिंसा के विरुद्ध संवेदना जगाती है तथा स्वतंत्रता, शांति और मानवीय गरिमा का महत्त्व समझाती है। यही गुण उसे देश और समय की सीमाओं से आगे ले जाते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष ऐतिहासिक प्रामाणिकता, किशोर मन की सच्ची अभिव्यक्ति, आत्मीय शैली और विपत्ति में भी जीवन के प्रति आशा ने ऐन फ्रैंक की डायरी को विश्वभर के पाठकों से जोड़ा है। इसलिए वह व्यापक रूप से पढ़ी जाने वाली पुस्तकों में स्थान रखती है।

त्वरित सुझाव: लोकप्रियता समझाते समय केवल युद्ध का वर्णन न करें; किशोर संवेदना, आत्मीय शैली और सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों को भी जोड़ें।